श्री हरिः

स्मारिका

श्री टीबरी नाथ साङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालय बरेली

तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

स्मारिका

२०४७ वि०
१९९० ई०

सम्पादक
डा० गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री
साहित्याचार्य, एम. ए., पी-एच. डी., साहित्यरत्न

सह सम्पादक
डा० श्रीमती सावित्री शर्मा
वेदाचार्य, एम. ए., पी-एच. डी.

प्रवीण कुमार उपाध्याय
व्याकरणाचार्य, एम. ए.
प्रधानाचार्य

प्रवन्ध सम्पादक
ला० रामकुमार खण्डेलवाल
सरक्षक एवं वित्तमन्त्री विद्यालय

प्रकाशक :—
श्री टीबरीनाथ साङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालय
नैनीताल मार्ग, बरेली-२४३००३ ।

स्मारिका. सुभाषित सूची

आशीर्वचन एवं शुभकामनाएँ

सर्वश्री शङ्कराचार्य त्रय, उपराष्ट्रपति, कृष्ण चन्द्र पन्त, डा० कर्ण सिंह,
उमा शंकर दीक्षित, महन्त अवेद्यनाथ, श्री विद्यानिवास मिश्र आदि ।

श्रद्धाञ्जलि एवं संस्मरण

स्व० श्री धर्म दत्त वैद्य एवं स्व० श्री अन्नी महाराज

परिचय

६ भगवान श्री टीबरीनाथ—श्री त्रिलोक चन्द्र सेठ
८ आपका संस्कृत महाविद्यालय—ला० श्री रामकुमार खण्डेलवाल
४१ वर्तमान युग के साहित्यकार डा० गोस्वामी—श्री जय नारायण शुक्ल

संस्कृत और संस्कृति

११ उपराष्ट्रपति के उद्गार—संकलित
१२ पूर्व लोक सभाध्यक्ष के उद्गार—संकलित
१५ भारतीय संस्कृति और संस्कृत—डा० श्री निवास शास्त्री
२१ साम्प्रदायिक सौमनस्य की सेतु संस्कृत—डा० ज्योति स्वरुप
२६ संस्कृत और उसका समृद्ध साहित्य—श्री अम्बा दत्त पाण्डेय
३८ विद्ययाऽमृतमश्नुते—डा० रमाकान्त शर्मा

संस्कृत अस्मिता का संघर्ष

१३ स्वतन्त्र भारते संस्कृतस्य स्थानम्—प्रो० विश्व नारायण ऋतायन
२४ वर्तमान शिक्षा में संस्कृत की आवश्यकता—श्री प्रवीण कुमार उपाध्याय
३० शैक्षिकी नीति सन्दर्भे संस्कृत क्व विराजताम्—श्री महेश चन्द्र शर्मा
३१ उपनिवेशवाद से जूझती आई है संस्कृत—श्री मोहन चन्द्र

कवि कर्म

२ संस्कृतम्—श्री वासुदेव द्विवेदी
१४ भारत वन्दना—आचार्य शिव दत्त मिश्र
१९ तार सप्तकम्—डा० बलभद्र प्रसाद शास्त्री
२३ कामयेऽहम्—डा० कृष्ण कान्त शुक्ल

श्रेयान् स्वः धर्मः

१६ भारत हिन्दुस्तान और हिन्दू—आचार्य यशवन्त सिंह चौहान
३४ संस्कार आवश्यक क्यों—डा० उषा मिश्रा
३६ अहं भूमिमददामार्याय—डा० सावित्री देवी शर्मा
४० महामना मालवीय का दिव्य सन्देश—संकलित
२८ महाविद्यालय दिनचर्या—संजीव कुमार
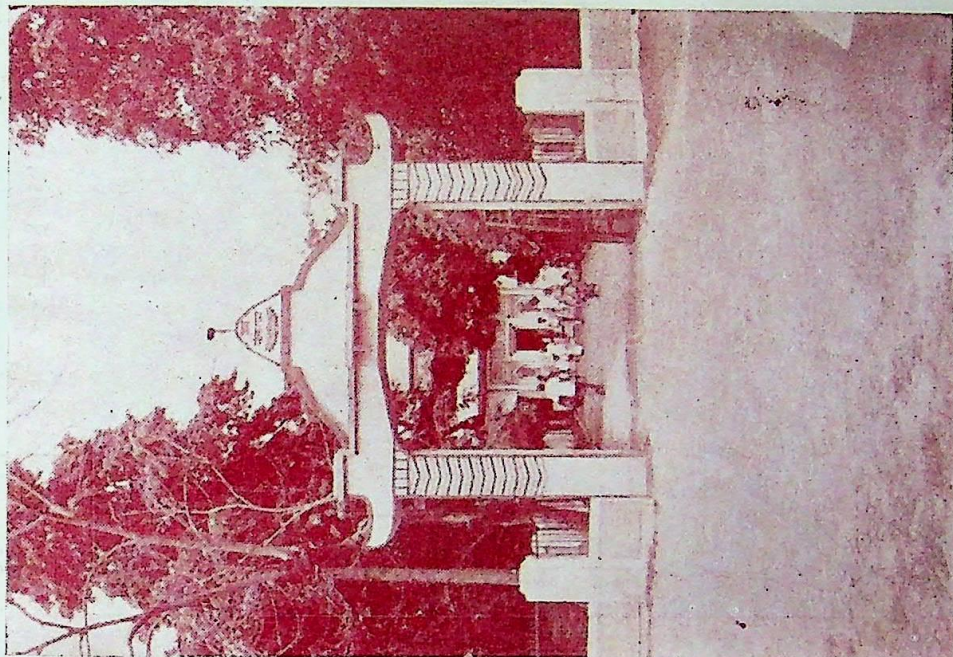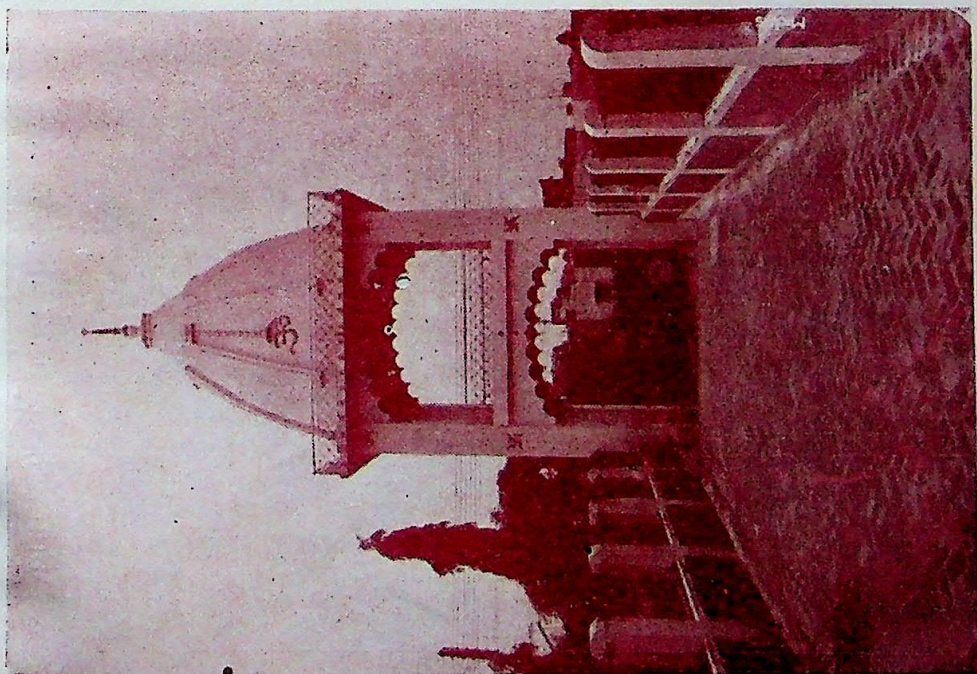
श्री टीबरीनाथ मन्दिर का गोपुर (दक्षिणी द्वार)

मन्दिर का पूर्वी द्वार

भगवान श्री टीबरीनाथ मन्दिर का द्वार

वट मूल में स्थित भगवान टीबरीनाथ
(नीचे अर्घा में शिवलिंग स्थित है जो चित्र में नहीं है)

परिसर के श्री राम जानकी मन्दिर में
भगवान गणपति की प्रतिमा

मन्दिर में स्थित
श्री राम भक्त हनुमान जी

श्री राम जानकी मन्दिर में
श्री राधा-कृष्ण की भव्य झाँकी

श्री लक्ष्मी नारायण जी

शुभाशंसा आशीर्वचनानि च

काञ्ची कामकोटि पीठाधीश्वर श्री श्री १००८ श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य्य महाराजानाम् आशीर्वचनम्

श्री चन्द्रमौलीश्वराय नमः

श्री शङ्करभगवत्पादाचार्य परम्परागत—
श्री-काञ्ची-काम कोटि-पीठाधिपति-
जगद्गुरु-श्री-शङ्कराचार्य-स्वामिनाम्
श्रीमठम् संस्थानम् काञ्चीपुरम्

दिनांक : १६-६-८७

श्री टीबरीनाथ साङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालये विशाल संस्कृत सम्मेलनं प्रचलिष्यति, इति ज्ञात्वा भृशं तुष्यामः।

तदानीं प्रकाश्यमानायै स्मारिकायै, संस्कृतस्य एतद्देश - प्राण-भूतत्वं तस्य च पुनर्विकासे करणीयं सर्वतोमुखं प्रयत्नमादिविषयाणां सुष्ठु अभिव्यञ्जने महतीं सफलतां प्रयच्छेत् श्री परमेश्वरः।

नारायण स्मृतिः

श्री श्री जगद्गुरु शङ्कराचार्य महासंस्थानम्, दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठम्, शृङ्गेरी

PRIVATE SECRETARY
To His Holiness
Sri Jagadguru Shankaracharya
Dakshlnamnaya Sri Sharada Peetham
SRINGERI 577 139 (Karnataka)

Camp: शृंगेरी
Ref. : DT/१०९१५
Date : २४-११-१९८७

वेद हमारे धर्म का मूल हैं। उसी के और संस्कृत भाषा के बिना आर्य संस्कृति का ज्ञान नहीं होता है। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि वेद और संस्कृत भाषा का रक्षण करें। बरेली श्री टीबरीनाथ क्षेत्र में इस कार्य के लिये महाविद्यालय बहुत कुछ काम कर रहा है। मेरा आशीर्वाद है कि विद्यालय चले और लोग उससे उत्साह पावें।

इति निवेदक
सि. वि. गिरिधर शास्त्री

।। श्री गुरवे नमः ।।

श्री वरिष्ठ ज्योतिष्पीठाधीश्वर

जगद्गुरु श्री श्री १००८

श्री शंकराचार्य स्वामि शान्तानन्द सरस्वती महाराजानाम्

आशीर्वचनम्

दिनांक : ४-३-८८

श्री कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे सस्कृतं सस्कृतिस्तथा, भारत प्रतिष्ठा प्रसादस्य द्विभित्तिका श्रेयस्करी, एकम् सस्कृतं परा सस्कृतिः, साम्प्रतम् द्वयोः सम्बर्धनं सुतरां समपेक्षितम् सर्वकारैश्च सामाजिक जनैरपि सेव्यमान भारतमूल स्रोतयोः संरक्षणं सर्वथा कार्यमेतद् । भावना भावित चेताः बरेलीस्थ श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालयः, कृत संकल्पः स्व कार्ये सन्निहितः। पाठशालायाः मंत्रि महाभागेन सूचित-मस्यां पाठशालायां छात्राध्ययनार्थं शुल्क रहिता सर्वा व्यवस्था निहिता, यथा पुस्तकानि, भोजनं, निवास कक्षं, वेद वेदाङ्गाध्ययनाध्यापनञ्च ।

पूर्वपञ्चवर्षतः अस्याः पाठशालायाः संचालनम् भवति । अधुना मध्यमा पर्यन्तं शिक्षा प्रचलति, श्रुत्वा मोदमानं चेतो जातः । अस्माकं शुभाशीर्वचनं मंगलकामना च, यतो हि, इयं पाठशालोत्तरो-त्तरमभिवृद्धि प्राप्नुयात् ।

इत्यलम् ।

सत्यमेव जयते

उप-राष्ट्रपति, भारत
नई दिल्ली
VICE-PRESIDENT
INDIA
NEW DELHI

२८ जनवरी, १९८८

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय बरेली, अपने वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है।

मैं स्मारिका की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

शंकर दयाल शर्मा

रक्षा मन्त्री
MINISTER OF DEFENCE
INDIA
नई दिल्ली

२० फरवरी, १९८८

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री टीबरीनाथ साँगवेद संस्कृत महाविद्यालय के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर संस्कृत सम्मेलन के आयोजन के साथ-साथ एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। संस्कृत उत्तर भारत की सभी भाषाओं की जननी है और इस भाषा के पठन-पाठन के प्रति रुचि पैदा करना हम सब का परम कर्तव्य है। मुझे पूरी आशा है कि महाविद्यालय अपने उद्देश्य के लिए हर संभव प्रयास करता रहेगा।

वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

कृष्ण चन्द्र पन्त

डा० कर्ण सिंह

६, न्याय मार्ग
नई दिल्ली

शुभकामना

देववाणी संस्कृत न केवल भारतीय संस्कृति की प्राणरूप भाषा है अपितु समस्त भारत को एक सूत्र में बांधने वाली राष्ट्रीय एकता की सुदृढ़ आधारशिला भी रही है।

संस्कृत के समस्त वाङ्मय में विश्व बन्धुत्व एवं सर्व धर्म समभाव का मौलिक चिन्तन निहित है। अतः संस्कृत के अध्यापन अध्ययन से मानवीय गुणों में उदारता समता, सौहार्द और सद्धर्म का विकास होता है।

मुझे यह जानकर परम हर्ष है कि बरेली नगरस्थ श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय इस सत्कर्म की ओर अग्रसर है। मैं उसकी सफलता की कामना के साथ उसकी ओर से प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए अपनी शुभकामनाएँ समर्पित करता हूँ।

डा० कर्ण सिंह

Umashanker Dikshit

TEL. : 3019089
1, CIRCULAR ROAD,
NEW DELHI - 110 021

२-१२-१९८७

श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय की ओर से स्मारिका का प्रकाशन हो रहा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई।

संस्कृत सम्मेलनों में अनेक विद्वान संस्कृत में ही भाषण देते हैं और उपस्थित समाज उसको भली प्रकार समझ लेता है। आकाशवाणी से जो संस्कृत में समाचार प्रकाशित किये जाते हैं। उनको किसी भी थोड़ी बहुत भाषा की जानकारी रखने वाले हिन्दी भाषी को समझने में कोई कठिनाई नहीं होती है।

मैं तो संस्कृत में प्रसारित समाचारों को केवल समाचार जानने के लिये नहीं वरन् उसके लालित्य का आनन्द लेने के लिए सुनता हूँ। मेरी यह मान्यता है कि बिना संस्कृत ज्ञान के भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता का पूर्ण ज्ञान, किसी व्यक्ति को, हो ही नहीं सकता। इसलिए संस्कृत का शिक्षण भारतीय सभ्यता की रक्षा के लिए अतीव आवश्यक है।

मेरा यह मत अवश्य है कि ऐसे विद्यालयो में संस्कृत के साथ ही भूगोल, इतिहास, गणित, विज्ञान आदि विषयों का शिक्षण भी होना चाहिये।

मैं विद्यालय को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ।

शुभाकांक्षी
उमाशंकर दीक्षित

ओम् नमो भवगते गोरक्षनाथाय

श्री गोरखनाथ मन्दिर

महन्त अवेद्यनाथ
सदस्य—लोकसभा

फोन : ६०३१
गोरखपुर-२७३०१५

प्रिय श्री खण्डेलवाल जी,

शुभाशीर्वाद !

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिये कार्यरत हैं और संस्कृत विद्यालय की स्थापना कर चुके हैं। इस समय जब शासन की नयी शिक्षा नीति में संस्कृत को बिल्कुल समाप्त कर दिया गया है, संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता और भी बढ़ गयी है क्योंकि हमारा सम्पूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक वैभव संस्कृत साहित्य में ही निहित है। संस्कृत को जिस प्रकार से समाप्त करने का षडयन्त्र सरकार द्वारा किया जा रहा है यदि वह उसमें सफल हो गयी तो हमारी संस्कृति भी समाप्त हो जायेगी। हमें संस्कृत भाषा को जीवित रखने के लिए अहर्निश प्रयास करने की आवश्यकता है।

मैं स्मारिका एवं विद्यालय के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

शुभेच्छु :–

महन्त अवेद्यनाथ

श्री रामकुमार खण्डेलवाल, मन्त्री
आभूषण सदन, शिवाजी मार्ग, बरेली।

शुभाशंसनम्

दिनांक : १.८.९०

धर्मोरक्षति रक्षतः_यो धर्मं रक्षति, तं धर्मो रक्षति, सन्ति वै धर्ममूलानि वेदाः। संस्कृत-भाषायाः संरक्षणाधीनं वेदानां हि संरक्षणम्। संस्कृत संरक्षणञ्च तत्प्रचार प्रसार माध्यमेन पाठशाला प्रबन्धादि करणेन च भवितुमर्हति। अस्ति च तदर्थं प्रयतमानो बरेली नगरस्थः श्री टीबरीनाथ साङ्गवेद महाविद्यालयः। अत्र विद्यालये भारतीय संस्कृतेः संरक्षणाय संवर्धनाय च सर्वं निःशुल्क सौविध्यं वर्तते।

वर्षेऽस्मिन् विद्यालयोऽयं स्मारिकां प्रकाशयतीति श्रुत्वा प्रसादमेति मे हृदयम्। कामयेऽहं मङ्गलं विद्यालयस्य स्मारिकायाश्चेति शम्।

रवीन्द्र नाथ पन्तः

प्राचार्यः

श्री एकरसानन्द संस्कृत महाविद्यालयः
मैनपुर्याम्।

विद्यानिवास मिश्र
कुलपति
सम्पूर्णान्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-२२१ ००२

दूरलेख : 'श्रुतम्'
दूरभाष [४३९११ कार्यालय
४३८३० आवास

पत्र-संख्या : ४७०५/९०१/९०

दिनांक : १७-८-९०

प्रिय शास्त्री जी,

आपका पत्र दि० १०-८-९० मिला। आप विद्यालय की ओर से पत्रिका छपा रहे हैं, यह हर्ष का विषय है। मेरी शुभकामना है कि यह महाविद्यालय संस्कृत वाङ्मय के अध्ययन - अध्यापन का उत्तम केन्द्र बने।

सस्नेह,

आपका

विद्यानिवास मिश्र

डा० बलभद्र प्रसाद शास्त्री,
सम्पादक (स्मारिका),
श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय,
श्री टीबरीनाथ मन्दिर परिसर,
नैनीताल रोड, बरेली-२४३ ००१।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान

क्रमांक : SVD/८७८८/२४२६

दिनांक : २१ दिसम्बर ८७

मंगलोपदेश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि श्री टीबरीनाथ साङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालय स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है। संस्कृत भाषा ने प्राचीन काल से देश को एकता के सूत्र में बाँध रखा है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता के ज्ञान के लिये संस्कृत भाषा का ज्ञान अपरिहार्य है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार में यह संस्कृत विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा। मैं इस पुनीत कार्य के लिये हार्दिक शुभकामनायें भेजता हूँ।

डा० मण्डन मिश्र
निदेशक
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
नई दिल्ली।

भूपेन्द्र नाथ शर्मा
विधायक काँवर क्षेत्र
बरेली

धन्वन्तरि मार्ग,
बरेली ।

शुभकामना

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता है कि श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय प्रगति की ओर अग्रसर है और इस वर्ष स्मारिका का भी प्रकाशन कर रहा है ।

मेरे पूज्य पिता श्री धर्मदत्त वैद्य इस विद्यालय की स्थापना में सहयोगी एवं आजीवन संरक्षक रहे हैं, अतः मेरी इस विद्यालय के प्रति सहानुभूति एवं आत्मीयता स्वाभाविक है ।

मैं हृदय से इसकी उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए स्मारिका के लिए शुभकामना प्रेषित करता हूँ ।

भूपेन्द्र नाथ शर्मा

फोन : पी.पी. 74785
श्री टीबरीनाथ मन्दिर कालोनी
नैनीताल रोड, बरेली ।
पिनकोड २४३ ००५

Shambhu Datt Belwal
शम्भूदत्त बेलवाल
पत्रकार

श्रद्धेय खण्डेलवाल जी,

श्री टीबरीनाथ साङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालय स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है, यह जानकर अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ । आपके भगीरथ प्रयासों से विद्यालय अपने लक्ष्य की प्राप्ति में अग्रसर है ।

संस्कृत भाषा हमारे राष्ट्र की प्रेरणा स्रोत है । हमारी संस्कृति व सभ्यता इसमें निहित है । प्रबन्धक मण्डल ने इस विद्यालय की स्थापना करके एक प्रशंसनीय कार्य किया है ।

मैं विद्यालय, उसके छात्रों तथा शिक्षकों के उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा के साथ साथ स्मारिका के लिए अपनी हार्दिक शुभकामना अर्पित करता हूँ ।

आपका शुभाकाँक्षी
शम्भूदत्त बेलवाल

।। श्री राधारमणो विजयते ।।

।। जयगौर ।।

श्री स्वामी चैतन्यकृष्णाश्रय तीर्थ (श्री अतुलकृष्ण गोस्वामी)

वैजयन्ती
ज्ञानगुदड़ी, वृन्दावन-२८११२१
दूरभाष : ८२४६७

सन्त शान्ता तीर्थ आश्रम
मोतीझील, वृन्दावन-२८११२४
दूरभाष : ८२४६६

दिनाँक : ३-९-९०

आज देश में_देश की प्राण रुपा और समग्र संस्कृति की चेतना स्वरुपा संस्कृत ही है जो मानव के सनातन संस्कारों तथा साधु परम्पराओं की एक मात्र अभिधान है । सदाचार-सत्संग-सच्चिन्तन और स्वकीय सर्वात्म साहित्य दर्शानादि का अध्ययन्न अध्यापन संस्कृत के बिना असम्भव है । अध्यात्म और सार्वभौम उपासना के मूल स्रोत और समस्त भारतीय भाषाओं का आधार और उद्भव इसी देव भाषा संस्कृत से हुआ है ।

इस संस्कृत भाषा के अध्ययन अध्यापन की परम्परा-परिवेश और पद्धति को जीवित रखने का अर्थ है इस महान राष्ट्र को जीवित स्वस्थ और सशक्त रखना ।

इस दिशा में टीबरीनाथ साँगवेद संस्कृत विद्यालय की सेवा अनुकरणीय स्पृहणीय और सर्वथा प्रशंसनीय है । मैं इसके पूर्ण विकास-प्रकाश के लिये श्री हरि के चरणों में प्रणत प्रार्थना करता हूँ ।

विनीत :

चैतन्य कृष्णाश्रय तीर्थ

।। विद्या दानं महादानं सर्व दानेषु दुर्लभम् ।।

हमारे नगर में श्री टीबरीनाथ बाबा की अनुकम्पा से और स्व० अन्नी महाराज की प्रेरणा से श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय का प्रादुर्भाव हुआ ।

भोले नाथ की कृपा ही से धार्मिक कृत्य सम्पन्न होते हैं वही अपने भक्तों के द्वारा धार्मिक कार्य प्रचलित कराते हैं यह बिल्कुल सत्य निर्णय है ।

इस विद्यालय का श्री गणेश कराने वाले परम श्रद्धालु भक्त देव संत विप्र में निष्ठा रखने वाले श्री ला० राम कुमार जी खण्डेलवाल सर्राफ ने तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग दिया है और अपना जीवन इसी में लगा दिया । अपने नगर में विद्यालय उत्तरोत्तर उन्नति के शिखर पर जा रहा है इस विद्यालय से पठन पाठन करने वाले निरन्तर समाज में प्रतिष्ठा को प्राप्त हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे । इसका श्रेय श्री खण्डेलवाल जी को प्राप्त है हम भगवान शङ्कर से प्रार्थना करते हैं उनकी बुद्धि विचारधारा इसी ओर अग्रसर बनी रहे और विद्यालय उत्तरोत्तर श्री वृद्धि करे ।

मैं हार्दिक शुभ कामना प्रकट करता हूँ ।

पं० जगदीश बल्लभ ज्योतिषी

५८२ साहूकारा, बरेली

मन्दिर में श्री राम जानकी लक्ष्मण की दिव्य झाँकी

श्री टीबरीनाथ मन्दिर में स्थापित दुर्गा प्रतिमाएं

मॉं शैलपुत्री

प्रथमा

मॉं ब्रह्मचारिणी

द्वितीया

माँ चन्द्रघण्टा

तृतीया

माँ कूष्मांडा

चतुर्थी

माँ स्कन्दमाता

पञ्चमी

माँ कात्यायनी

षष्ठी

माँ कालरात्री

सप्तमी

माँ महागौरी

अष्टमी

माँ सिद्धदात्री

नवमी

भगवती दुर्गा जी

नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम्

विद्यालय स्थापना के प्रेरणा स्रोत

स्व० श्री धर्मदत्त वैद्य
(भू. पू. मन्त्री उ. प्र. शासन)
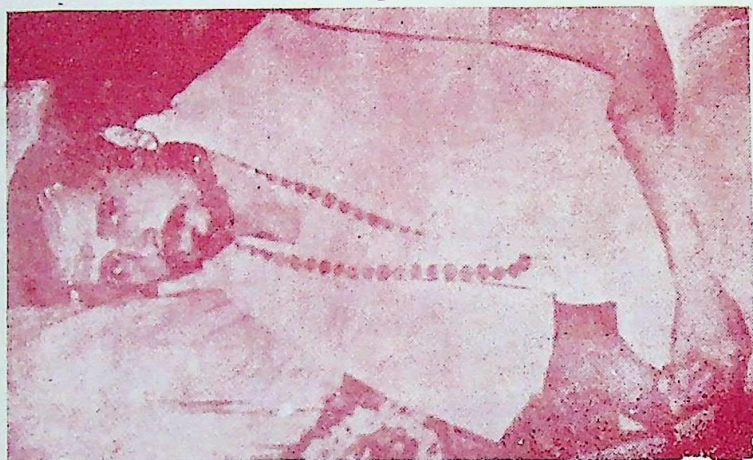
स्व० श्री शिव कुमार शर्मा
अन्नी महाराज

(संस्मरण)

विद्यालय स्थापना के प्रबल सहयोगी एवं आजीवन संरक्षक

स्व० श्री धर्मदत्त वैद्य

स्वनामधन्य परम श्रद्धेय श्री धर्मदत्त वैद्य जी का जन्म हरियाणा के अन्तर्गत पटौदी ग्राम में एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में १० फरवरी १९१२ में हुआ था। उनके पिता श्री स्वामी शिवदयाल तथा माता का नाम पार्वती था। उनका विवाह १९२८ में श्रीमती ब्रह्मा देवी से हुआ था।

प्रारम्भिक शिक्षा के उपरान्त वैद्य जी ने पंजाब, राजस्थान, जयपुर में आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की। सन् १९३० में विदेशी वस्त्रों की दुकान पर धरना देने के अभियोग में वे गिरफ्तार किये गये। छूटने के बाद पजाब में कुछ नवयुवकों के सम्पर्क में आकर 'नौजवान भारत सभा' के सदस्य बन गये और क्रान्तिकारी साहित्य "१८५७ के धर्मयुद्ध का सच्चा इतिहास" आदि प्रतिबन्धित साहित्य को गुप्त रूप से नवयुवकों को पढ़ने को देते और उनसे वापस लेकर दूसरे व्यक्तियों को देते। इस संदिग्ध अवस्था में पुलिस द्वारा निगरानी के कारण आपका कालेज से निष्कासन कर दिया गया।

बरेली आकर वैद्य जी सेठ दामोदर स्वरूप के सम्पर्क में आ गये और क्रान्तिकारी साहित्य को नवयुवकों में वितरित करने का कार्य चलता रहा। इनकी इन गतिविधियों के कारण पुलिस निगरानी प्रारम्भ हो गयी और इनके दवाखाने के पास में ही एक सी. आई. डी. के सिपाही ने दर्जी की दुकान खोल लीं। कुछ समय बाद जब पता चला तो पुस्तकों को हटा कर श्री राधाचरन की आढ़त किला बाजार में रख दिया गया। १९३४ में श्री गोविन्द बल्लभ पन्त बरेली से सेन्ट्रल असेम्बली के लिये चुनाव लड़े तो सेठ जी ने बहेड़ी तहसील चुनाव प्रचार के लिये इन्हें नियुक्त किया।

१९३६ में अंग्रेजी सरकार ने मंत्रि परिषद के परामर्श के बिना द्वितीय महायुद्ध में भारत के सम्मिलित होने की घोषणा से मन्त्रि परिषद ने त्याग पत्र दे दिया। उसी समय वैद्य जी जिला काँग्रेस कमेटी के संगठन मंत्री थे। अतः समस्त जिले का दौरा कर सत्याग्रहियों की सूची बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया और अनेक तहसीलों पर कांग्रेस की सभायें की। सत्याग्रह से ३ मास पूर्व २८ सितम्बर १९३९ को दो सभाओं में आपत्तिजनक भाषण देने पर इन्हें डी० आई० आर० में गिरफ्तार कर लिया गया।

इन्हीं दिनों वैद्य जी की धर्मपत्नी भीषण रूप से रोगी चल रहीं थीं अतः छोटे पुत्र की देखभाल वैद्य जी स्वयं करते थे। वैद्य जी की गिरफ्तारी के समय वह ५ साल का बालक गम्भीर बीमार था। उसकी स्थिति और गम्भीर होती गयी और बच्चे का स्वर्गवास हो गया दिसम्बर में सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और वैद्य जी को एक वर्ष के कारावास की सजा दी गयी।

व्यक्तिगत सत्याग्रह के बाद १९४१ से ही दूसरे आन्दोलन की तैयारी प्रारम्भ हो गयी। ९ अगस्त को प्रातः श्री वैद्य जीं को मदारी दरवाजे से गिरफ्तार किया गया।

१९४७ में स्वतन्त्रता के बाद विभाजन का वीभत्स दृश्य देखकर वैद्य जी बड़े दुखी थे। यहाँ से जाने और पाकिस्तान से आने वाले व्यक्तियों के जान माल सुरक्षित नहीं थे। प्रदेश कांग्रेस कमेटी की बैठक में श्री रफी साहब ने कांग्रेस के सदस्यों से पाकिस्तान से शरणार्थियों को लाने में सहायता की अपील की। श्री ब्रजमोहन लाल शास्त्री तथा वैद्य जी ने अपने नाम दिये जो शरणार्थी शिविरों से वायुयान द्वारा लोगों को सुरक्षित ला सके। वैद्य जी ४० दिन तक कान्स्टीट्यूशन में रहकर आनरेरी फ्लाईड आफीसर के पद पर कार्य करते रहे और हजारों की संख्या में पेशावर, मुल्तान, रिसालपुर, लायलपुर कैम्पों से शरणार्थियों को भारत लाये। यह कार्य बड़े खतरे के साथ किया गया। पाकिस्तान लायलपुर हवाई अड्डे पर एक बार सेना ने इन्हें कई घण्टे तक हिरासत में रखा। देहली वायरलेस से सूचना आने पर ही उन्हें छोड़ा गया।

आप शहर काँग्रेस के अध्यक्ष एवं जिला काँग्रेस कमेटी के मन्त्री के लिये अनेक बार चुने गये। उ० प्र० कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष भी रहे। १९४८ में जिला बोर्ड बरेली के सदस्य चुने गये तथा शिक्षा समिति सहित कई कमेटियों के अध्यक्ष चुने गये। काँवर क्षेत्र से १९५२ में वे विधान सभा के सदस्य चुने गये।

प्रशासन में—उन्होंने इसी निर्वाचन क्षेत्र से ६ बार चुनाव में सफलता प्राप्त की तथा १९५८ में सभा-सचिव, राज्यमंत्री तथा कैबिनेट मन्त्री का कार्यभार संभाला। लम्बे समय तक मन्त्रि परिषद में रहते हुये परिवहन, जेल, आबकारी, स्वायत्त शासन, स्वास्थ्य विभाग के कार्य सुचारू रूप से वहन किये। १९५७ में सिंचाई निगम के अध्यक्ष रहे और १९७७ में श्री कमलापति त्रिपाठी जी के आदेश से अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देकर विधान सभा के लिये चुनाव लड़ा और सफल हुये।

अपने सामाजिक जीवन में वैद्य जी ने अनेक संस्थाओं की स्थापना की और अनेकों से आजीवन जुड़े रहे। शिक्षा क्षेत्र में उनका सराहनीय योगदान रहा। मीरगंज में राजेन्द्र प्रसाद डिग्री कालेज की स्थापना का श्रेय उन्हीं को है।

श्री टीबरीनाथ साँगवेद संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना में उनका महान योगदान रहा। वे इसके आजीवन संरक्षक रहे। वे इसकी प्रगति और श्रीवृद्धि की शुभकामना करते रहे।

निधन :—नगर पितामह इस महापुरुष का ७७ वर्ष की आयु में ४ नवम्बर १९८९ को स्वर्गवास हो गया। यह विद्यालय स्मारिका के माध्यम से उन्हें सादर स्मरण करता हुआ अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

उनके पुत्र श्री भूपेन्द्रनाथ शर्मा वैद्य जी के सुयोग्य उत्तराधिकारी हैं। वे वर्तमान में शेरगढ़ (बरेली) क्षेत्र से विधायक हैं और श्री वैद्य जी के चरण चिन्हों पर चल रहे हैं। समाज के साथ ही इस विद्यालय को भी उनसे अनेक आशायें हैं।

(संस्मरण)

विद्यालय स्थापना के प्रेरणा स्रोत

बरेली के एक धार्मिक गौरव

स्व० श्री अन्नी महाराज

गौड़वशावतंस पं० नारायण दास जी के आत्मज पं० सुन्दर लाल जी, मु० छीपी-टोला (किला निवासी) के पुत्ररत्न श्री शिव कुमार शर्मा शास्त्री उपनाम अन्नी महाराज का जन्म वैशाख कृष्ण ८ सं० १९८५ वि० को हुआ। अल्पायु में ही पिता के स्वर्ग सिधार जाने पर अपने पितामह पं० नारायण दास जी की देख-रेख में अपनी शैक्षिक योग्यता शास्त्री तक श्री पं० मूलचन्द तथा आचार्य शिवदत्त जी की कृपा से प्राप्त की।

पंडित जी भगवान शंकर के परमभक्त थे। अत: उन्होंने धम सम्राट श्री करपात्री जी एवं जगद्गुरु ब्रह्मलीन श्री कृष्ण बोधश्रम जी महाराज की कृपा से श्री धर्म संघ प्रदोष महामंडल, शक्ति मंडल, वैष्णव मंडल, महिला मंडल सस्थायें स्थापित कीं, जिससे मानव ईश्वर की ओर लगे और अपने लक्ष्य को पूर्ण करें।

अन्नी महाराज के दो पुत्र तथा दो कन्यायें हैं, जिनका जन्म प्रदोष के दिन हुआ जिससे सिद्ध होता है कि वे भोलेनाथ के अनन्य सेवक थे। उनमें निष्ठा, लगन, त्याग असीम था जिसमें वे अपने स्वास्थ्य-क्षुधा तथा आर्थिक लाभ को भी भूल जाते थे।

उन्होंने यज्ञों, धर्म सम्मेलनों का आयोजन किया और धार्मिक नेताओं ने भी उनकी निष्ठा रूचि को पूर्ण किया और सदैव कृपा करने इस बरेली नगरी में आते रहे। चारों पीठों के जगद्गुरू शंकराचार्य जी महाराज की उन पर विशेष कृपा थी और उनकी धर्म प्रचार में रुचि होने के कारण श्री कांचीकाम कोटि पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य जी ने बरेली में पधार कर उनको जनता एवं विद्वानों की उपस्थिति में अपने कर कमलों द्वारा मार्गशीर्ष कृष्ण ४ सं० २०३० वि. को जरी के शाल से पुरस्कृत किया और २-२-७६ को भारतीय साहित्य संघ कासगंज के द्वारा "सनातन धर्म सिद्धान्त प्रचार" पर धर्म मार्तण्ड की उपाधि प्रदान की।

महाराज जी की प्रकृति सरल तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली था जिसके कारण सभी के द्वारा उनकों सम्मान प्राप्त था। इसी कारण अपने नगर में जब रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय का शिलान्यास करने भूतपूर्व मन्त्री श्री एन० डी० तिवारी पधारे तो महाराज जी ने ही विधि-विधान से तिवारी जी से पूजन कराया और दक्षिणा यह कह कर नहीं ली कि हमारे बच्चे ही तो शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और करेंगे।

बरेली नगर की धार्मिक संस्थाओं को और आयोजनों को आपने सदैव सहयोग दिया और सत्य की भावना से प्रेरित होकर सत्य को स्थिर रखने में अथक प्रयत्न किया।

महाराज जी प्रान्तीय धर्म संघ के उपाध्यक्ष, बरेली शाखा, अखिल भारतीय गोरक्षा अभियान समिति शाखा के तथा सिद्ध ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड कार्यालय के मंत्री तथा संस्कृत परिषद बरेली के उपमंत्री, श्री धर्मोदय प्रकाशन मंदिर के संचालक, श्री कृष्ण बोध प्रमोद धार्मिक पुस्तकालय के व्यवस्थापक तथा श्री धर्मोदय नित्य सत्संग मंडल के प्रबन्धक, व्रतोत्सव पर्व निर्णय पत्रिका के प्रधान सम्पादक तथा श्री राधा माधव संकीर्तन मण्डल के संरक्षक एवं जिला ब्राह्मण सभा के आजीवन सदस्य रहे।

उनका जीवन दूसरों के हित के लिये था। अतः उनके द्वार पर सदा भक्तजन, साधु, महात्मा छोटे से लेकर बड़े तक आते रहते थे जिनका उन्होंने तन-मन-धन से सदैव स्वागत किया।

श्री महाराज जी लगभग १० वर्ष से अनेक रोगों से पीड़ित थे परन्तु उन्होंने अपना मनोबल नहीं गिरने दिया तथा सभी कार्यों को साहस के साथ सम्पादन किया उनका शरीर क्षीण हो गया परन्तु साहस में लेशमात्र भी अभाव नहीं था। सदैव सबसे सौहार्दपूर्ण व्यवहार किया। सबका स्वागत किया सबको आदर दिया। परम भगवान शंकर के भक्त ने स्तुति आदि की ३७ पुस्तकें अपने जीवनकाल में भक्तों के सहयोग से कल्याणार्थ प्रकाशित की। वे प्रदोष के दिन पौष शुक्ल त्रयोदशी २०३५ को कैलाशवासी हो गये। हम सब का कर्त्तव्य है कि सदैव "सत्यं वद धर्मं चर" के आदर्शों के माध्यम से उनकी स्मृति को स्मरण करें और उनके प्रदर्शित मार्ग पर अग्रसर रहें।

बरेली नगर में श्री टीबरीनाथ साङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालय स्थापना की प्रेरणा देने और उसकी स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए उन्हें विद्वत्समाज और संस्कृत जगत् में सदा स्मरण किया जायेगा।

उनकी प्रेरणा का फलित बिन्दु यह विद्यालय आज स्मारिका के माध्यम से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अजरामरवत् प्राज्ञो, विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्॥

बुद्धिमान पुरुष को अजर अमर के समान विद्या और धन की चिन्ता करनी चाहिए परन्तु धर्म का आचरण ऐसे करना चाहिए मानो मृत्यु ने चोटी पकड़ ली हो।

श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय, बरेली

* स्मारिका *

अलोकसामान्यविभूतिभास्वरो, विराजते यस्त्रिवटीतले परः ।
समादधानो भुवि लोकमङ्गलं, शिवाय भूयादिह टीबरीश्वरः ।।*

प्रथम	बरेली, श्री राधाष्टमी, सम्वत् २०४७	वर्ष १९९०

–तेजस्वि नावधीतमस्तु–

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ।

हे परमात्मन् ! आप हम गुरु शिष्य की साथ-साथ रक्षा करें । हम दोनों का साथ-साथ पालन पोषण करें । हम दोनों साथ-साथ बल प्राप्त करें । हम दोनों की अध्ययन की हुई विद्या तेज पूर्ण हो । हम दोनों परस्पर द्वेष न करें ।

—×—

*अलौकिक ऐश्वर्य से भासित तीन वट वृक्षों के नीचे जो परमेश्वर विराजमान हैं, पृथ्वी पर लोक मंगल का समाधान करते हुए वे श्री टीबरीनाथ भगवान शंकर इस कार्य को सफल करें ।

संस्कृतम्

शब्द लालित्यलीलावनं संस्कृतम्
चारुमाधुर्य्यधारागृहं संस्कृतम्
विश्व चेतश्चमत्कारकं संस्कृतम्
पूर्वजानां यशःस्मारकं संस्कृतम्

भारतीयैकतासाधकम् संस्कृतम्
भारतीयत्व - सम्पादकं संस्कृतम्
ज्ञान-पुञ्ज - प्रभादर्शकं संस्कृतम्
सर्वदानन्दसन्दोहदं संस्कृतम्

सर्वमस्तिष्कसंस्कारकं संस्कृतम्
सर्ववाणी - परिष्कारकं संस्कृतम्
सत्प्रथप्रेरणादायकं संस्कृतम्
सद्गुणग्रामसंधायकं संस्कृतम्

विश्वबन्धुत्वविस्तारकं संस्कृतम्
सर्वभूतैकताकारकं संस्कृतम्
सर्वतः शान्ति संस्थापकं संस्कृतम्
पञ्चशील - प्रतिष्ठापकं संस्कृतम्

त्याग सन्तोष सेवाव्रतं संस्कृतम्
विश्वकल्याण निष्ठायुतं संस्कृतम्
ज्ञान विज्ञान सम्मेलनं संस्कृतम्
भक्ति मुक्ति द्वयोद्वेलनं संस्कृतम्

धर्मकामार्थ मोक्षप्रदं संस्कृतम्
ऐहिकायुष्यमुत्कर्षदं संस्कृतम्
कर्मदं ज्ञानदं भक्तिदं संस्कृतम्
सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरं संस्कृतम्

सोऽहमस्मीति निर्धारकं संस्कृतम्
भेदभावस्य संसाधकं संस्कृतम्
एकमेवप्रभु बोधकं संस्कृतम्
सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरं संस्कृतम्

श्री वासुदेव द्विवेदि महाभागात्
सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
वाराणसीतः

सम्पादकीय

श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय बरेली की बहु प्रतीक्षित स्मारिका आपके कर कमलों में है। आज से लगभग आठ वर्ष पूर्व बरेली के धर्मप्राण महानुभाव स्व० श्री धर्मदत्त वैद्य, श्री त्रिलोक चन्द्र सेठ, श्री लाला रामकुमार खण्डेलवाल एवं स्व० श्री अन्नी महाराज आदि महानुभावों ने बरेली के समाज में संस्कृत और उससे जुड़े हुए भारतीय संस्कृति के अंगभूत कर्म-काण्ड विधान के विद्वानों का पूर्ण अभाव अनुभव किया था। तदनन्तर एक ऐतिहासिक निर्णय लिया था कि ऐसे सर्वाङ्गीण संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की जाए जिसमें संस्कृत अध्ययन के साथ-साथ समस्त कर्म-काण्ड की शिक्षा दी जाए, जहां संस्कृत भाषा के ऐसे प्रौढ़ पण्डित जन्म लें जो भारतीय संस्कृति के उन्नायक प्रचारक और मार्गदर्शक बनें।

भगवान टीबरीनाथ के चरणों में उनके आशीर्वाद की कामना के साथ इस महान शिक्षायज्ञ क्षेत्र की स्थापना की गयी। बरेली के धर्मप्रिय श्रेष्ठिवर्ग और उदार महानुभावों का सम्बल इसके लिए उपलब्ध हुआ। किसी प्रकार की राजकीय सहायता की अपेक्षा किये बिना ही श्री टीबरीनाथ साङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना हो गयी।

वैदेशिक शासन के दासतायुग में इस बरेली नगर में १८ संस्कृत विद्यालय थे, जहां प्रतिष्ठित, विद्वान-शिक्षक थे और छात्रावास छात्रों से पूर्ण रहते थे। पर अपने ही शासन काल में संस्कृत जैसी देववाणी की जितनी अनपेक्षित उपेक्षा हुई है उसके लिए कोई एक ही दोषी नहीं है। स्वाधीनता की उमंग में भावी आशाओं के साथ उज्ज्वल भविष्य की कामना में समाज का प्रत्येक अंग आधुनिक शिक्षा का आधार खोजने लगा। आधुनिक अंग्रेजी परम्परा के विद्यालय सर्व सुलभ होने लगे, तो परम्परागत संस्कृत की नई पीढ़ियां भी उधर ही लुढ़क गयीं। फलतः संस्कृत विद्यालयों की उपेक्षा होने लगी।

जो कुछ शेष रह गया था, उसे भौतिकता की मृग मरीचिका ने नष्ट कर दिया। प्रशासन राजनीति के दांवपेच के दलदल में भाषा नीति ही स्पष्ट नहीं कर सका और इसका सर्वाधिक दुष्परिणाम भोगना पड़ा संस्कृत और उसके सांस्कृतिक परिवेश को।

इस संस्कृत विद्यालय की स्थापना के पश्चात् जिन कठिनाइयों का अनुभव हुआ, उसमें आर्थिक पक्ष गौण ही रहा। सर्वाधिक कठिनाई थी, संस्कृत अध्ययन के लिए समर्पित छात्रों की, अच्छे सुयोग्य आचार्यों की। जबकि यही पक्ष अति महत्वपूर्ण था।

उत्तम छात्रों की उपलब्धि के लिए अनेकों साधनों का उपयोग किया गया। विद्यालय प्रारम्भ में फूस की झोपड़ी में था। पर दानवीरों की सहायता से एक उत्तम भवन का निर्माण हो गया, जहां अध्ययन के साथ छात्रों एवं शिक्षकों के लिए भी आवास सुविधा उपलब्ध थी। छात्र एवं अध्यापकों के लिए निःशुल्क भोजन व्यवस्था भी विद्यालय का एक आकर्षण रहा है। बरेली जैसे महानगर के मध्य भगवान टीबरीनाथ के परिसर में उनके दर्शन लाभ के साथ छात्रों को अन्य लाभ भी सुलभ रहे है।

इतना होने के साथ विज्ञापनों का भी सहारा लिया जाता रहा है। नेपाल जैसे देश के छात्रों को भी पूरी सुविधा दी गयी है पर योग्य प्रतिभाशाली छात्रों को विद्यालय अभी तक आकर्षित नहीं कर सका है।

यहाँ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की परीक्षा दिलाई जाती रही है जहां की परीक्षाओं को सारे भारत वर्ष और नेपाल में भी पूर्ण मान्यता और गौरव प्राप्त है। इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों को भी उन सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के सुअवसर उपलब्ध है, जो किसी अन्य विश्वविद्यालय के छात्रों को उपलब्ध होते हैं। अन्य सेवाओं में भी उसी प्रकार समान सुविधायें हैं। पर आधुनिकता की अन्धी दौड़ में सारा समाज ही भटक गया है। विद्यालयों की भीड़ तो बढ़ी ही है, पर छात्रों की भीड़ ने उन्हें भी पंगु बना दिया है। आज इन तथाकथित आधुनिक विद्यालयों और विश्वविद्यालयों से पढ़कर, वह पीढ़ी निकल रही है, जिसका न वर्तमान है न भविष्य। नौकरी की सम्भावना में असंख्य बेरोजगार युवक भविष्य के लिए अपना वर्तमान भी नष्ट कर रहे हैं। इसके लिए बहुत कुछ दोषी वह स्वाधीन भारत का प्रशासन भी है, जो गत चालीस वर्षों में युवा पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के अनुरूप शिक्षा नीति में परिवर्तन नहीं कर सका।

जहाँ तक परम्परागत संस्कृत शिक्षा का प्रश्न है भारत में संस्कृत शिक्षा ग्रहण करने वाला युवक कभी बेरोजगार नहीं रहा है। अभी भी भारतीय संस्कृति में वह आकर्षण है कि संस्कृत का विद्वान, वेदपाठी, कर्मकाण्डी अथवा व्यासासन का प्रवक्ता कभी भूखा नहीं रह सकता। संस्कृत भाषा से ही भारतीय संस्कृति ने जन्म लिया है, अतः इसका पढ़ने वाला व्यक्ति पूर्ण भारतीय संस्कारवान् मानव तो बनता ही है, वह समाज में मानवता का विकास भी करता है।

फिर भी हम इन तथाकथित अंग्रेजी विद्यालयों और अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों में अपने बालकों को पढ़ाने के प्रति पूर्वाग्रही हैं, यह जानते हुए भी कि वहाँ न संस्कार हैं न संस्कृति। अनुशासन हीनता, भारतीय संस्कार-पराङ्मुखता जहां की पहचान बन गयी है। परीक्षाओं के पश्चात् एक बेरोजगार पीढ़ी का बोझ समाज पर प्रतिवर्ष बढ़ जाता है। परन्तु

हम पूर्वाग्रह तोड़ने से डरते हैं। यह भय ही हमारी संस्कृति और संस्कृत भाषा को नष्ट किए दे रहा है। हम विदेशी संस्कारों पर धन लुटा रहे हैं और परिणाम की उपेक्षा कर रहे हैं। आज देश का नैतिक पतन इसका साक्षी है। टीबरीनाथ संस्कृत महाविद्यालय इस आत्म मन्थन और संघर्ष की घड़ी में आपके साथ है।

आज यह विद्यालय उन सम्पन्न नागरिकों और विशेष रूप से विप्रवर्ग से यह अपेक्षा करता है कि वे अपना एक बालक इस विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजें। जिन धनी परिवारों में बालक किसी नौकरी की अपेक्षा नहीं रखते हैं, वे यहां अध्ययन करने के लिए उन्मुख हों। उनकी प्रतिभा से इस विद्यालय का विकास होगा और विकसित विद्यालय के प्रतिभावान छात्र समाज के आदर्श मानव बनेंगे।

यदि बरेली का छात्र हार्टमैन राधा माधव पब्लिक स्कूल और मानस स्थली में लम्बी फीस देकर कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा कर सकता है तो भला आशुतोष भगवान शंकर टीबरीनाथ के परिसर में, वह क्या है, जो सुलभ नहीं हो जाएगा।

जन-जन को यह भी ज्ञात होना चाहिए कि यह विद्यालय भगवान श्री टीबरीनाथ जी के अंक में विराजमान है। उनके द्वारा पोषित भी है और उनके नाम की पताका लेकर चल रहा है। यह सत्य है कि उनकी शरण का सहारा लेकर चलने वाले सदा अग्रणी रहे हैं।

गत वर्षों में विद्यालय ने अपना मूल सुदृढ़ किया है। इसके पुष्पित, पल्लवित और फलित होने का शुभ अवसर सामने है। इसे केवल आपकी शुभकामना और सहयोग का जल चाहिये, जिसका यह अधिकारी है। आखिर आपने ही तो इसे यहाँ तक पहुंचाया है।

आज समाज से यही अपेक्षा है कि इस विद्यालय को जिस स्नेह से प्रतिष्ठित किया है, उसी प्रकार इसकी प्रगति की कामना करें और फलता फूलता देखें। विद्यालय के लिए की गयी शुभकामना भगवान टीबरीनाथ की अभ्यर्थना ही होगी।

यह 'स्मारिका' आपको यही स्मरण करा रही है। धन्यवाद!

इति शुभम्!

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृतामूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्॥

(नीति शतकम्)

जिनके श्री चरणों में विद्यालय समर्पित है

भगवान श्री टीबरीनाथ–एक परिचय

मन्दिर द्वारा की जा रही सेवायें एवं भावी योजनायें

—श्री त्रिलोक चन्द्र सेठ,
मंत्री श्री टीबरीनाथ मंदिर कमेटी
एवं विद्यालय संरक्षक

श्री टीबरीनाथ मन्दिर कुछ वर्षों से बरेली महानगरी का हृदय केन्द्र बन गया है। यद्यपि यह मन्दिर विक्रमी सम्वत् १४४७ में स्थापित हुआ था अर्थात् लगभग ६०० वर्ष प्राचीन है। मन्दिर की अचल सम्पत्ति में लगभग एक लाख वर्ग गज जमीन तथा भव्य श्री राम जानकी मन्दिर भवन एवं कमरे तथा कुछ किरायेदारों हेतु मकान और तीन वट वृक्षों के नीचे भगवान भोला नाथ जी त्रिबटीनाथ अपभृंश होकर श्री टीबरीनाथ नाम से विराजमान हैं। बाबा टीबरीनाथ जी भगवान आशुतोष के प्रत्यक्ष स्वरुप हैं और ऐसा विग्रह जो श्री गोला गोकरण नाथ के सदृश है, अन्यत्र दुर्लभ है। इनकी सिद्धि के प्रताप से विगत सात-आठ वर्षों में ही बरेली महानगर के मध्यभाग में श्री टीबरीनाथ मन्दिर के नाम से विशाल कालोनी बस गई है जिसमें हजारों व्यक्ति सुख एवं सुविधापूर्ण आवास प्राप्त कर रहे हैं।

श्री राम जानकी मन्दिर में भगवान श्री गणेश जी, श्री राधा कृष्ण जी, श्री राम लक्ष्मण सीता जी, श्री लक्ष्मीनारायण जी की नवीन एवं आर्कषक, मूर्तियों की प्रतिष्ठा के अतिरिक्त विशाल हनुमान जी का स्वरुप ऐसी सुन्दर झांकी प्रदान कर रहा है जो हमारे रुहेलखण्ड मण्डल का गौरवमय धार्मिक स्थल बन गया है।

बाबा टीबरीनाथ के प्राचीन मन्दिर में छत की टीन एवं दीवारों को परिवर्तित करके पक्की छत तथा अष्टकोणीय भवन का स्वरुप अप्रतिम रूप से निखर कर आया है, जो बाबा टीबरीनाथ की प्रत्यक्ष कृपा का स्वयं एक उदाहरण है। इसी ऐतिहासिक मन्दिर में बाबा टीबरीनाथ की कृपा से श्री नवदुर्गा के नौ मन्दिर तथा द्वादश ज्योतिर्लिंग श्री भगवान शंकर एवं श्री दुर्गा देवी जी की भव्य मूर्तियाँ स्थापित हुई हैं। जो परम मनोहर एवं दर्शनीय हैं एवं भगवान शंकर के मन्दिर की अनुपम शोभा बढ़ा रही हैं।

मन्दिर द्वारा की जा रही सेवायें :

भारतीय संस्कृति की सुरक्षा हेतु संस्कृत भाषा के पठन पाठन की महती आवश्यकता को ध्यान में रखकर श्री टीबरीनाथ मन्दिर कमेटी के सहयोग से श्री टीबरीनाथ सांगवेद महा-

विद्यालय के नाम से एक संस्था की स्थापना की गई है, जिसमें कक्षा प्रथमा से कक्षा आचार्य तक की निःशुल्क शिक्षा, भोजन तथा छात्रावास व्यवस्था प्राप्त है ।

इसके अतिरिक्त श्री राम जानकी मन्दिर के समक्ष विशाल प्रांगण में महानगरी का सबसे विशाल मंच का निर्माण किया जा चुका है । मंच के सामने लगभग २० सहस्र व्यक्तियों के एक साथ बैठने का स्थान उपलब्ध है । इस मंच के दोनों ओर भवन भी बने हुये हैं तथा यह पूरा प्रांगण एवं भवन धार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त विवाह आदि समारोहों के लिये भी उपलब्ध कराया जाता है ।

इसी भगवान शंकर के मन्दिर में द्वादश ज्योतिर्लिंगों की बड़ी ही आर्कषक, मनोरम और कलापूर्ण झांकियां स्थापित हो चुकी हैं । भगवान भोलानाथ के इस दिव्य एवं विशाल मन्दिर में श्री नवदुर्गा के नौ विग्रह स्थापित हो चुके हैं एवं १२ ज्योतिर्लिंगों की स्थापना होने के पश्चात् यह मन्दिर भारत के अनेक महत्वपूर्ण मन्दिरों में एक विशेष गौरव को प्राप्त है तथा यह मंदिर एक अनुपम कीर्तिमान स्थापित कर चुका है ।

हमारी आगामी समाज सेवा की योजना :

मन्दिर कमेटी ऐसे दो विवाह भवन बनाने के लिये उद्यत है जिसमें कन्या पक्ष एवं वर पक्ष दोनों को विवाह संबंधी सारी सुविधायें प्राप्त हो सकेंगी तथा कम से कम व्यय में विवाह आदि सम्पन्न हो सकेंगे । निर्धन वर्ग के लोगों के लिये सामूहिक विवाह, जनेऊ एवं मुण्डन संस्कारों आदि की भी सुविधायें प्राप्त कराई जावेंगी । समयानुसार समाज में विवाह के अवसर पर जनता को सुख, सुविधा और अनावश्यक खर्चों से बचने के लिए लगभग २०-२५ लाख रुपये की लागत से एक विवाह स्थल केन्द्र बनाने की योजना तय हो चुकी है, निकट भविष्य में वह काम पूरा कर लेने का हमारा संकल्प है । एक समय में कई विवाहों के दोनों पक्ष उसमें ठहर भी सकेंगे और विवाह का सारा कार्य वहाँ सम्पन्न हो सकेगा, इससे हजारों-हजारों रुपया के अनावश्यक व्यय की प्रत्येक पक्ष को बचत हो जायेगी और सुविधा अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ करेगी । समय की इस आवश्यकता को श्री टीबरीनाथ मन्दिर कमेटी ने समझकर यह समाज हितकारी योजना बनाई है ।

योग एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं हेतु भी सेवा करने की योजना चालू होना है । बाबा टीबरीनाथ से प्रार्थना है कि वे अपने भक्तजनों की सारी आपदायें दूर करते रहें तथा उनकी कामनाओं को पूर्ण करें तथा बरेली महानगरी के हृदय में विराजमान रह कर समस्त नगरवासियों का अपनी कृपा से परित्राण एवं कल्याण करते रहें । और यह तीर्थ स्थल भारतीय वैदिक सनातन धर्म संस्कृति का एक प्रेरक और सेवा परायण केन्द्र बने ।

आपका संस्कृत महाविद्यालय

□ रामकुमार खण्डेलवाल
विद्यालय संरक्षक एवं
भू.पू. मन्त्री विद्यालय समिति

आदरणीय महानुभाव !

आपके श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय को स्थापित हुये ८ वर्ष पूरे हो रहे हैं । स्व० श्री पं० शिव कुमार जी श्री अन्नी महाराज की मुख्य प्रेरणा से और पूज्य श्री १०८ श्री स्वामी विष्णु आश्रम जी महाराज, पूज्य श्री १०८ स्वामी अतुल कृष्ण जी महाराज, पूज्य श्री संत हरमिलापी जी महाराज, श्री १०८ स्वामी चैतन्य प्रकाशानन्द तीर्थ की आशीर्वादात्मक आज्ञा से संस्कृत और भारतीय संस्कृति के निष्ठावान नगर के महानुभावों ने नगर में संस्कृत शिक्षा के केन्द्रों का सर्वथा अभाव देखते हुये भगवान टीबरीनाथ के श्री चरणों में विद्यालय को स्थापित किया ।

आर्थिक सहयोग :

इस विद्यालय को श्री टीबरीनाथ मन्दिर कमेटी ने पहले ८०० मीटर भूमि और अब ६०० मीटर भूमि पुनः प्रदान की तथा कालांतर में आर्थिक सहयोग भी देना प्रारम्भ किया । इस समय तक इस भूमि पर १२ कमरे, पटा हुआ बरामदा आदि स्थान जनता के सहयोग से बनवाये जा चुके हैं । टीबरीनाथ मन्दिर कमेटी कई वर्षों से आर्थिक सहायता प्रदान करना प्रारम्भ करके इस समय ३५००/- रुपये मासिक अनुदान दे रही है । विद्यालय का इस समय ८०००/- रुपये मासिक का व्यय चल रहा है ४५००/- रुपये महीने की पूर्ति नगर के संस्कृत शिक्षा प्रेमी जनों के मासिक अनुदान द्वारा की जा रही है । इसमें कैम्फर फैक्ट्री के डायरेक्टर और हमारे विद्यालय के सभापति श्री डा० ए० पी० सिंह जी महोदय के सहयोग से लगभग १००००/- वार्षिक प्राप्त हो रहा है ।

इस वर्ष बालकों की संख्या ४५ रही है। सभी विद्यार्थियों और चार आवासीय अध्यापकों को दोनों समय निःशुल्क भोजन, आवास और पढ़ाई की सुविधा दी जाती रही है । आगामी वर्ष विद्यार्थियों की संख्या १०० कर लेने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है इसके लिये एक छात्रावास बनाने की नितान्त आवश्यकता है जिसके लिये नगर के उदार धनी-मानी संस्कृत शिक्षा प्रेमी लोगों से सहयोग की अपेक्षा की जा रही है ।

शिक्षा की व्यवस्था :

उपलब्ध साधनों के आधार पर इस विद्यालय में प्रथमा से आचार्या तक के छात्रों के

विद्यालय के आधार स्तम्भ

कु० विमला गोयल, D. G. C.
अध्यक्ष टीबरी मन्दिर कमेटी

श्री ए० पी० सिंह, पूर्व M L. C.
अध्यक्ष विद्यालय कार्यकारिणी

श्री भूपेन्द्र नाथ शर्मा, विधायक
सुपुत्र स्व० श्री धर्मदत्त वैद्य
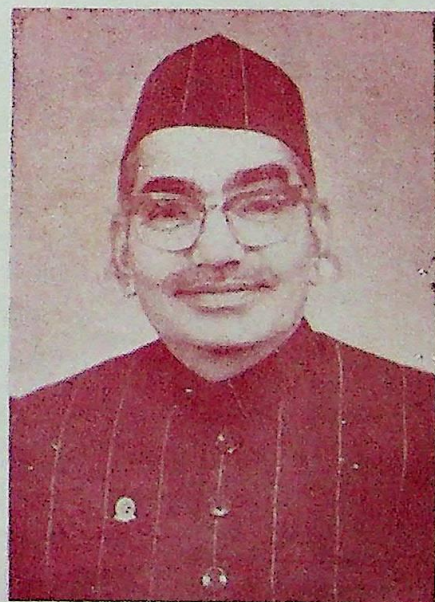
श्री त्रिलोक चन्द्र सेठ
मन्त्री श्री टीबरी मन्दिर कमेटी एवं
विद्यालय संरक्षक

विद्यालय कार्यकारिणी के पदाधिकारी

ला० श्री रामकुमार खण्डेलवाल
व्यवस्थापक एवं वित्तमन्त्री

श्री काशीनाथ शर्मा
उप-सभापति

श्री कैलाश नाथ गोयल
मन्त्री
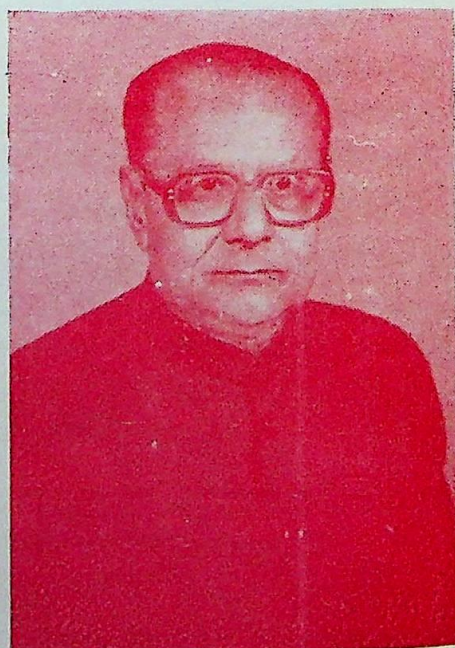
श्री श्रीनाथ खण्डेलवाल
उपमन्त्री
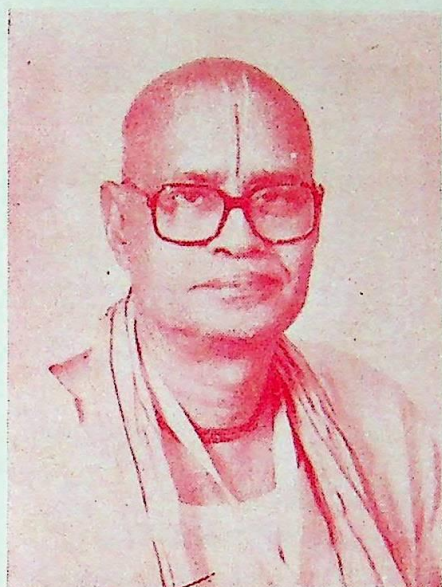
श्री स्वामी कृष्ण चैतन्याश्रय तीर्थ
विद्यालय के शिलान्यासकर्त्ता, सन्त

डा० बलभद्र प्रसाद गोस्वामी
स्मारिका सम्पादक एवं संयोजक शिक्षा समिति

अध्यापक वर्ग
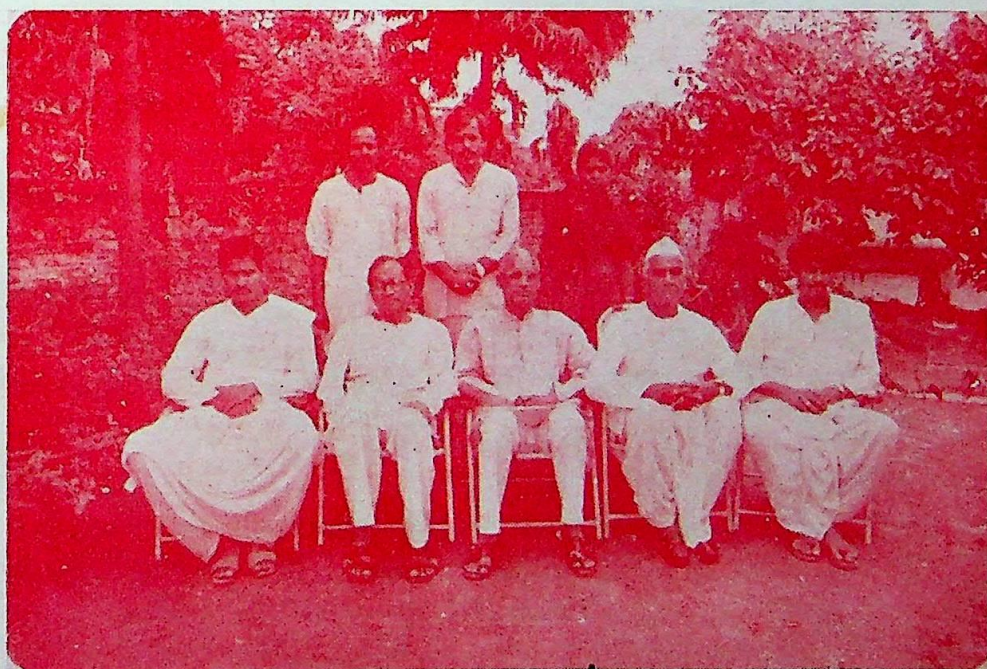
(पीछे) श्रीमती सरोज सक्सेना, श्री रामनारायण झा, श्री अम्बा दत्त पाण्डेय
(आगे) श्री प्रवीण कुमार उपाध्याय (प्राचार्य), श्री के० एन० गोयल (मन्त्री),
श्री भूपेन्द्र नाथ शर्मा (विधायक) श्री रामकुमार खण्डेलवाल (वित्तमन्त्री), श्री समीरनाथ

विद्यालय के परम हितैषी एवं दानी महानुभाव

श्री रामऔतार अग्रवाल
कोषाध्यक्ष श्री टीबरी मन्दिर कमेटी
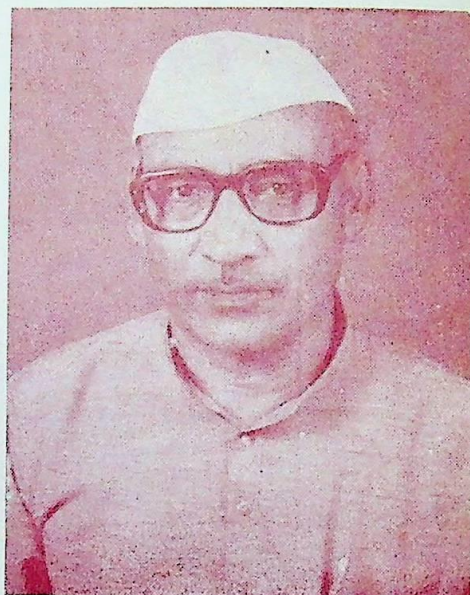
श्री शम्भूदत्त बेलवाल
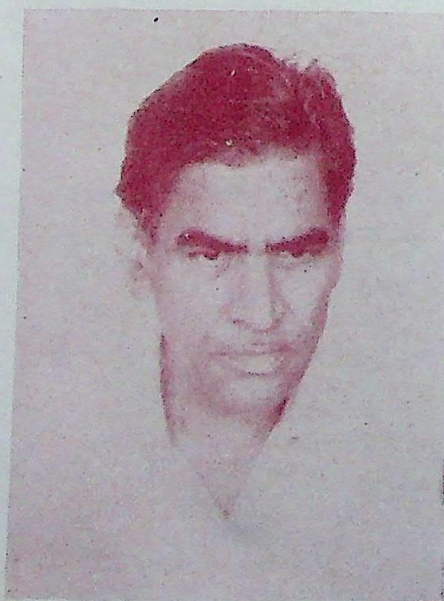
स्व० श्री राधेश्याम खण्डेलवाल

श्री नवीन खण्डेलवाल

लिये अध्ययन आवास और भोजन की व्यवस्था की जाती रही है। वर्तमान में पांच अध्यापक अध्यापन कार्य करते हैं जिनमें दो अध्यापक अंग्रेजी आदि आधुनिक विषयों की शिक्षा देते हैं।

विद्यालय में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की परीक्षाओं के अध्यापन की व्यवस्था चली आ रही है। यहां की प्रथमा मध्यमा शास्त्री आचार्य उपाधियां क्रमशः जूनियर हाईस्कूल, हाईस्कूल-इण्टरमीडिएट, बी० ए० तथा एम० ए० के समकक्ष सम्पूर्ण भारत तथा नेपाल आदि देशों में मान्य हैं। इन उपाधियों को प्राप्त करने वाले छात्र सभी प्रतियोगी सेवाओं में प्रवेश पाते हैं।

दिनचर्या :

आवासीय विद्यालय होने के कारण बालकों को प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठने से लेकर रात्रि शयन के समय तक सुव्यवस्थित और सुनियोजित ढंग से दिनचर्या का पालन कराया जाता है। धार्मिक शिक्षा, सदाचार और अच्छे संस्कार बालकों में स्थापित करने के सन्दर्भ में ईश्वर प्रार्थना, संध्या वन्दन, व्यायाम, खेल, मन्दिर में जाकर शिव महिम्न गान और अन्य धार्मिक त्यौहारों के अवसर पर अनेक प्रेरक कार्यक्रम तथा नये बालकों के सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है।

छात्रों की निःशुल्क व्यवस्था :

यह विद्यालय न केवल आवासीय है अपितु यहां छात्रों के लिये निःशुल्क आवास के साथ निःशुल्क भोजन की भी व्यवस्था चलती है। भवन में छात्रों के लिये आवासीय कमरे हैं और कमरों में बिजली पंखा आदि सभी सुविधायें निःशुल्क हैं।

छात्रावास की भावी योजना :

विद्यालय में आगामी वर्षों में छात्रों की संख्या को ध्यान में रखते हुये वर्तमान भवन के समीप ही उपलब्ध भूमि पर अपेक्षित सुविधा सम्पन्न नवीन छात्रावास बनाने की योजना तैयार है, जिसमें शिक्षाप्रिय महानुभावों के सहयोग की आवश्यकता है। आशा है यह कार्य शीघ्र पूर्ण हो जायेगा।

छात्रों की संख्या :

विश्व को अपने गौरवमय संस्कृत साहित्य में निहित संस्कारों की भूमिका प्रदान करने वाले व मार्गदर्शन करने वाले भारत का यह दुर्भाग्य ही है कि आज इस देश के नागरिकों पर पाश्चात्य भौतिक सभ्यता का इतना बड़ा प्रभाव है कि उन्हें भारतीय संस्कृति की जननी संस्कृत भाषा के प्रति उपेक्षा सी हो गयी है। जबकि विदेशों में संस्कृत भाषा का सम्मान दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

अतः हम अपने बन्धुओं का ध्यान इस बात की ओर दिलाना चाहते हैं कि अपने इस

टीबरीनाथ संस्कृत महाविद्यालय में उन परीक्षाओं के अध्यापन की व्यवस्था है जिनकी भारत में सभी सेवाओं के लिए समान रूप से मान्यता प्राप्त है। अतः यहाँ की परीक्षा के बाद किसी भी सेवा में या किसी परिषद या विश्वविद्यालय की अग्रिम परीक्षा में बैठने में कोई बाधा नहीं है।

इसके साथ ही यह विद्यालय उस दूषित वातावरण से छात्रों को मुक्त रखता है जो आजकल अधिकांश विद्यालयों में छात्रों को अनुशासनहीन और सामाजिक दोषपूर्ण बनने से रोक नहीं पाता है, साथ ही यहाँ मिलते हैं शुद्ध नैतिक विचार, उच्च भारतीय संस्कार और आदर्श जीवन का मार्ग। विद्या प्रेमियों और अभिभावकों से निवेदन है कि अपने बालकों को ऐसे संस्कार सम्पन्न संस्थान में शिक्षा दिलायें जो उनके जीवन के लिये उच्च मानव संस्कारों का निर्माण कर सके।

छात्रवृत्ति योजना :

शिक्षा मानव जीवन का आधार है और प्रत्येक नागरिक को यह सुलभ होनी चाहिये अतः यह विद्यालय मेधावी परिश्रमी और सदाचार सम्पन्न छात्रों के लिये छात्रवृत्ति के रूप में आर्थिक सहायता भी देना चाहता है जिससे विपन्न होते हुये भी योग्य छात्र शिक्षा प्राप्त कर सकें।

उद्यम व्यवस्था :

"पढ़ो और कमाओ" योजना में विद्यालय का प्रयास रहा है। जिसके माध्यम से छात्र अध्ययन के शीघ्र उपरान्त ही थोड़े से श्रम से अर्थोपार्जन भी करने में सफल हुये हैं। लगभग ३०-३२ ब्राह्मण बालक अब तक विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करके पौरोहित्य और कर्मकांड के कार्यों में लगकर जीविकोपार्जन करते हुए समाज की सेवा कर रहे हैं। कर्मकांड कराने वाले पंडित लोगों की समाज में जो कमी हो गई है उसकी पूर्ति में हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों का योगदान उत्तरोत्तर बढ़ते जाने की पूरी आशा है।

विद्यालय का सौभाग्य है कि नगर के कई संस्कृत के विद्वान और समाज सेवी महा-पुरुषों का संरक्षण एवं मार्ग दर्शन हमारे विद्यालय को प्राप्त है। मुझे पूर्ण आशा है कि हमारा विद्यालय अब आगे उत्तरोत्तर अधिक गति से तथा हर दृष्टि से उन्नति करेगा और सारे समाज का सहयोग इसी प्रकार अधिकाधिक प्राप्त होता रहेगा। □

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः,
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्रदोषः॥

(पञ्चतन्त्रम्)

संस्कृत को हम न बचा पाये तो विदेशी उठा ले जायेंगे

—माननीय उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा के उद्गार

उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने देश की प्रगति और सुखद भविष्य के लिए संस्कृत भाषा और साहित्य को महत्वपूर्ण बताते हुए इसके विकास और संरक्षण पर बल दिया है।

वह यहां केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के रजत जयन्ती समारोह में दीक्षान्त भाषण कर रहे थे। डा० शर्मा ने स्पष्ट किया कि संस्कृत भाषा और साहित्य देश को प्रगति की ओर ले जाने का प्रभावी यन्त्र है "आज संस्कृत का महत्व केवल हमारे देश में ही नहीं बलिक दूर-दराज के उन देशों के लिए भी है, जिन पर भारत की गहरी छाप पड़ी है।"

उपराष्ट्रपति ने कहा कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि संस्कृत जीवित रहेगी और फैलेगी। उन्होंने कहा कि यदि हमारे देश में इसके विश्वास और संरक्षण के लिए कार्य नहीं किया गया, तो यह कार्य विदेशों में होने लगेगा।

डा० शर्मा ने संस्कृत भाषा और साहित्य को भारत की अमूल्य धरोहर बताते हुए कहा, कि हमें इसे भावी-पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखना होगा। इसके लिए अभी से प्रभावी प्रयास की जरुरत है।

उन्होंने कहा कि अनेक देशों में संस्कृत समृद्ध भाषा के रूप में आगे बढ़ रही है वास्तव में संस्कृत प्रगति और मानवता के विकास का एक अभिन्न अंग समझी जाने लगी है। यूरोप, अमेरिका, सोवियत संघ, और जापान में इसका अध्ययन किया जा रहा है। ब्रिटेन के अनेक शैक्षिक संस्थानों के पाठ्यक्रम में भी संस्कृत का प्रवेश हो चुका है। इस कारण आज विदेशों में संस्कृत भाषा और साहित्य के अनेक ज्ञाता तैयार हो गये हैं।

उन्होंने कहा कि विकसित देशों में संस्कृत के अध्ययन की ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा है, काफी बड़ी राशि और संसाधन इस काम में लगाये जा रहे हैं।

डा० शर्मा ने कहा कि संस्कृत-साहित्य की वही आलोचना करते हैं जो इससे भली-प्रकार परिचित नहीं। वास्तव में संस्कृत सबसे सरल भाषा है तथा इससे सभी भाषाओं का उद्भव हुआ है। उन्होंने देश की शैक्षिक संस्थाओं से संस्कृत को समृद्ध बनाने में सहयोग की अपील करते हुए कहा कि इसके संरक्षण तथा अध्ययन के लिए कारगर कदम उठाये जायें।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

राष्ट्रीय एकता की जननी संस्कृत

–श्री बलराम जाखड़
(तत्कालीन) अध्यक्ष लोकसभा
(प्रकाशित उद्‌गार)

जयपुर ५ अप्रैल, लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने कहा है कि देश की एकता और अखंडता बनाये रखने के लिये संस्कृत भाषा को जन-जन तक पहुंचाना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि संस्कृत ही देश की सबसे पुरानी और समृद्ध भाषा है जो सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँध सकती है।

श्री जाखड़ यहाँ राजस्थान संस्कृत अकादमी के पांचवें वार्षिक सम्मेलन का उद्‌घाटन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्व के अनेक राष्ट्रों ने संस्कृत को अपनाकर अपने यहाँ बहुत अधिक कार्य किया है, जबकि हम इस क्षेत्र में पिछड़ते गये हैं।

उन्होंने कहा कि संस्कृत इतनी प्राचीन और समृद्ध भाषा है कि विश्व के अनेक देशों ने अपनाकर इस क्षेत्र में काफी काम किया है। यहाँ के वेद और पुराण बेहद प्राचीन व ज्ञान की दृष्टि से समृद्ध हैं।

श्री जाखड़ ने बताया कि अपनी संस्कृति और प्रकृति की रक्षा करना बहुत आवश्यक है। प्रकृति को भुला देने के कारण ही आज देश में अकाल और सूखे की स्थिति पैदा हो रही है। उन्होंने पर्यावरण को बनाये रखने के लिये अधिकाधिक वृक्ष लगाने पर भी बल दिया।

श्री जाखड़ ने इस बात पर जोर दिया कि देश के प्रत्येक बालक को प्रारम्भ से ही संस्कृत भाषा की शिक्षा दी जाये तथा माध्यमिक शिक्षा तक संस्कृत को अनिवार्य शिक्षा बनाया जाये और विद्यार्थियों के प्रति प्रेरित करने के लिये छात्र वृत्ति एवं अन्य प्रकार की सहायता भी दी जानी चाहिये।

राजस्थान के (तत्कालीन) राज्यपाल श्री बसंतदादा पाटिल ने कहा कि देश की सबसे प्राचीन भाषा होने के कारण संस्कृत में देश को एक सूत्र में बांधने की ताकत है।

उन्होंने कहा कि जब देश में तनाव और हिंसा का वातावरण हो, उस समय शांति कायम करने के लिये संस्कृत की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

राजस्थान संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष डा० मंडन मिश्र ने कहा कि संस्कृत के विकास में राजस्थान का काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

डा० मिश्र ने बताया कि अगले वर्ष यहाँ अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन का भी आयोजन किया जायेगा, जिसमें देश भर से संस्कृत विद्वान भाग लेंगे।

स्वतन्त्र भारते संस्कृतस्य स्थानम्

—प्रो० विश्वनारायण ऋतायनः शास्त्री,
अध्यक्षः, असम-संस्कृत-परिषदः
प्राक्तन-लोक-सभा-सदस्यः, गोहाटी-३

संस्कृत-भाषा प्राचीनकाले राष्ट्रभाषा, धर्मभाषा तथा जनभाषा इति अवस्था-चतुष्टयं लभमाना विराजते स्म। शिलालेख-ताम्रशासनादिषु राजाज्ञा संस्कृतमयी उट्टंकिता आसीत् तथा स्वपरराष्ट्रकार्येषु संस्कृतेति इयमेव भाषा व्यवहृता। संस्कृतभाषायां यावन्तो ग्रन्था विलिखिता अभवन् न कस्यांचिद् भाषायां तावन्तो दृश्यन्ते अनुमीयन्ते वा। एकांश एव ग्रन्थानां प्रकाशितः। इदानीमपि परश्शता ग्रन्थाः संस्कृतभाषायां प्रतिवर्षं प्रकाशं लभन्ते। धर्मकामार्थसाधने नियोजिता संस्कृत-भाषा केषांचित् जनानां जीविकार्थमेवेति कथनमर्वाचीनम्। यथा तथा वा भवतु। भारतीयानां धर्मसाधने संस्कृतभाषाया अपरिहार्यतां न कोऽपि अपलपितुं शक्नोति। एषा भाषा जनानामपि भाषा आसीत् यतो बहवः शब्दा जनजीवनादेव रूपमाद-दानाः संस्कृतस्य सौष्ठवं वर्द्धयन्तो विराजन्ते। तस्मात् संस्कृत-भाषा आसीदिति ब्रुवाणस्य विवदनो न वक्रीभवति।

संस्कृत-भाषा संविधानस्वीकृतासु पञ्चदश-भाषासु अन्यतमा, परन्तु संस्कृतस्य पठने पाठने च न जननेतारो न वा प्रान्तीयसर्वकाराः कृतसंकल्पा दृश्यन्ते। संस्कृतस्य प्रशंसायां सर्व एव मुखराः, कार्यकाले कार्यहन्तार इति दुरात्मता एव पदं करोति। अपसर्पतु दुरात्मता। प्रायः सर्वासां भारतीयभाषाणां जनन्याः संस्कृतभाषाया नितरां प्रयोजनमिति। यतः संस्कृतस्य हानौ एता अपि हीनतां गमिष्यन्ति।

सर्वेषां सुखबोधाय आकाशवाणी संस्कृतमयं कथनं नाटकं च प्रचारयेत्। इदानीं प्रतिदिनं संस्कृतमयी वार्ता आकाशवाणीतः श्रूयते, परन्तु सा वार्ता पञ्चनिमेषात्मिका ह्रस्वतमा इति सर्वान् न रञ्जयति। अस्मिन् विषये समयोचितं करणीयमिति।

स्वदेशे भारतसर्वकारेण प्रदत्ताज्ञा याथातथ्येन संस्कृतभाषायामपि भवेत्। अत्र तावत् राष्ट्रपतिना उद्घोषितः समयः संस्कृतमयो भवेत्, तैः प्रदत्तम् अलंकरणं संस्कृतवाक्ययुतं-भवेदिति च। भारतीया राजदूताः परराष्ट्रेषु राष्ट्रपतिप्रदत्तप्रत्ययपत्रं संस्कृतभाषायां दद्युरिति निश्चेतव्यम्।

भारतात्मा संस्कृतवाङ्मये निवसति अतः संस्कृतस्य वैकल्ये आत्मनो वैकल्यम्, तस्मिन् जीर्णे आत्मा विदेही भविष्यतीति सर्वैः जनैस्तथा भारतसर्वकारेण प्रान्तीयसर्वकारैश्च कृतोद्यमैर्भवितव्यमिति। स्वतन्त्रे भारते संस्कृत-भाषा कार्यविशेषसम्पादनार्थं राजभाषा भवेत् पञ्चदशभाषासु च प्राथम्येन परिगणिता भवेदिति।

भारत वन्दना

—आचार्य शिवदत्त मिश्रः
साहित्य व्याकरणाचार्य

पीतानि तानि बिमलानि जलानि यस्य ।
भुक्तं सदन्नमपि यस्य बल-प्रदं तत् ।।
आच्छादनानि निखिलानि सुसेवितानि ।
सर्वोन्नतः स मम भारतवर्ष एषः ।।

दुर्गन्ध - वन्मल - निराकरणेऽनुकूलः ।
वायुर्विशुद्धिकृदयं सुरभिः प्रवाति ।।
देहं विभूषयति धूलिरयं यदीयः ।
उत्कृष्ट भूति-युत भारतवर्ष एषः ।।

गोदावरी सुर-नदी यमुना च गङ्गा ।
चर्मण्वती सकल - मान्य - शतद्रु रेताः ।।
नद्यः सदा सुर-पवित्रित-वन्दितस्य ।
सिञ्चन्ति पाद-तलमस्य जलेन सर्वाः ।।

एतानिमानखिल - सज्जन पूज्य-पादान् ।
श्रद्धा विकास परिवर्द्धित भव्य भावान् ।।
भावेन भाविति-मतिः सकलः समुद्रः ।
प्राक्षालयद् निज तरङ्ग-करेण यस्य ।।

श्री राम कृष्ण नृहरि-प्रवरा वराहः ।
अन्येऽभवन्नपि च यत्र कलावताराः ।।
सर्वैः प्रशंसित-पदा गुण गुम्फिता च ।
एतादृशी सुविमला मम जन्म भूमिः ।।

देशस्य पित्रा सदृशस्य यस्य ।
सेवा मया प्राण - पणैर्विधेया ।।
पुत्रत्व-मस्माकमनिष्फलं स्यात् ।
क्रिया च मे सार्थकतामुपेयात् ।।

जयति-जयति नित्यं मातृ-भूमिर्मदीया ।
हरति-हरति दुःखं या मदीयं सदैव ।।
सरति-सरति कीर्तिः निर्मला सर्वतोऽस्याः ।
वहति-वहति रक्षा-भारमस्माकमेषा ।।

भारतीय संस्कृति और संस्कृत

—डा० श्रीनिवास शास्त्री
अलीगढ़

जो भाषा अनादि काल से जिस देश की आचार-विचार-व्यवहार का सशक्त माध्यम रही हो, जिस भाषा से राष्ट्र की पहचान सम्भव हो, और जो उसकी संस्कृति का पर्याय बन चुकी हो कालान्तर में उसी भाषा के अभ्युदय-स्थल पर निवास करने वाले नागरिकों के लिए 'संस्कृतं कथं लोकप्रियं स्यात्' इस विषय पर चिन्तन करने के लिये बाध्य होना पड़े, उस भाषा और उस राष्ट्र का इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है। यही नहीं वस्तुस्थिति तो आज यह है कि संस्कृत के प्रचार-प्रसार का रचनात्मक कार्य जितना देश से बाहर हो रहा है उसका कुछ प्रतिशत भी यदि भारत में यत्न किया जाता तो संस्कृत को शायद यह दुरावस्था प्राप्त न होती।

प्रत्येक राष्ट्र का महत्व उसकी संस्कृति में जाना जाता है, भारतीय संस्कृति अपना एक स्थान रखती है और उसी के आधार पर भारतीयों का संसार भर में सम्मान है। हमें गौरव है कि अनेक विषम परिस्थितियों से गुजरते हुए भी भारतीय संस्कृति अक्षुण्ण बनी रही किन्तु किसी भी देश में यदि समयानुकूल जनमानस की विचार-धाराओं को ध्यान में रखते हुए उसके विकास एवं प्रचार की व्यवस्था नहीं होती तो संस्कृति को आघात पहुंच सकता है। हमारी भारतीय संस्कृति के मूलस्रोत वेद-वेदान्त-उपनिषद् तथा अन्यशास्त्र हैं जिनका ज्ञान संस्कृत के विना सम्भव नहीं है। आज भारत में संस्कृत के विद्वानों का अभाव होता जा रहा है चूंकि संस्कृत का पाठ्य-क्रम दोष-पूर्ण हो गया है। अन्य भाषा की तरह केवल लेक्चरों से संस्कृत का अध्यापन पूर्ण नहीं हो सकता। गुरु के सान्निध्य में रहकर ही संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था सही हो सकती है, तभी शास्त्रों के मर्म को सही प्रकार से समझा जा सकता है। देश की स्वतन्त्रता को ४० वर्षो से अधिक बीत गये किन्तु अभी तक हिन्दी राष्ट्रभाषा का स्थान नहीं ले सकी। कुछ अर्थो में यदि यह कहा जाये कि हम हिन्दी के प्रचार में पिछड़ गये हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए संस्कृत का ज्ञान अनिवार्य है। वैसे तो जितनी भी देशीय भाषायें है उनकी जननी संस्कृत है। इन सभी कारणों को दृष्टि में रखते हुए संस्कृत की आवश्यकता का अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आज सारा संसार विकास की ओर अग्रसर हो रहा है किन्तु जब तक मानवीय मूल्यों के आधार पर मानव का विकास नहीं होता तब तक संसार में शान्ति सद्भावना और समानता नहीं हो सकती। यह केवल भारतीय संस्कृति की ही देन है। जिसने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्घोष करके संसार को उच्चतम मानवता का स्वरुप दिया है। आज के इस परमाणु युग में मानवीय मूल्यों के आधार पर ही शान्ति कायम हो सकती है जो केवल भारतीय संस्कृति से ही सम्भव है और भारतीय संस्कृति का मुख्याधार संस्कृत भाषा है। □ □ □

भारत हिन्दुस्तान और हिन्दू

—स्व० आचार्य यशवन्त सिंह चौहान
भू० पू० प्रधानाचार्य आदर्श संस्कृत महाविद्यालय सकाहा, हरदोई
एवं सदस्य संस्कृत अकादमी उ० प्र०

मानवीय सभ्यता एवं ज्ञान-विज्ञान का आदिस्रोत हमारा पवित्र राष्ट्र भारत ही है। जिस युग में विश्व के अन्य देशवासी ज्ञान शून्य मानवीय आचार-विचार से अपरिचित एवं पाशविक जीवन यापन कर रहे थे। उस युग में सृष्टि के आदि काल से ही अपौरुषेय-ज्ञान-राशि वेदों का अनुशीलन चिन्तन करते हुए इस देश के अग्रजन्मा तपस्वी मनस्वी ऋषिगण मानवीय संस्कृति एवं आचार-विचार का पावन संदेश विश्व के सभी मानवों को प्रदान कर रहे थे। अत: मानवता के पथ-प्रदर्शक इस भारत देश को विश्व के देश वासियों ने ससम्मान विश्व गुरु के रूप में स्वीकार किया था। तथा इस देश की उदार ज्ञान गरिमा एवं आध्यात्मिक चिन्तन तत्परता के कारण ही इस देश को भारत (भा=ज्ञान,_रत=तत्पर) कहकर अन्वर्थ नाम से अभिहित किया था। (यद्यपि भारत के नामकरण के सम्बन्ध में अन्य हेतु भी इतिहास वेत्ताओं द्वारा बतलाए जा रहे हैं। तथापि आदि काल से ज्ञान गरिमा एवं सदाचार तत्परता का वह हेतु पूर्णतया सङ्गत भी प्रतीत होता है।)

कालान्तर में भारत देश को हिन्दुस्थान इस नाम से सम्बोधित किया गया। इसका भी कारण उक्त ज्ञान-गुरुत्वसम्पन्न आचारनिष्ठ एवं सदाचारपरायण हिन्दु जाति के निवास स्थान को ध्यान में रखकर ही 'हिन्दु-स्थान' इस नाम को सार्थक एवं युक्ति सङ्गत समझ कर मान्यता प्रदान करना ही कहा जा सकता है विदेशी समाज भी इस ही तथ्य को हृदयङ्गम करते हुए अपनी भाषा में इसे 'इण्डिया' कहने लगा।

अपनी आदि संस्कृति के पोषक हिन्दू जाति की गौरव-गाथा से सारा विश्व प्रभावित एवं अनुप्राणित होता रहा है। राष्ट्रभक्त भी "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" का सार्थक घोष करके अपने को पूर्ण रूप से गौरवान्वित समझते हैं। हिन्दू जाति की उदार भावना एवं सार्वभौम हितचिन्तन परम्परा से कौन प्रभावित नही हुआ ? सभी देशवासी इस जाति की संस्कृति एवं महनीय आचरण-शीलता को स्वीकार करते रहे हैं भगवान शंकराचार्य के समकालिक आचार्य वृहस्पति ने वार्हस्पत्य-शास्त्र में कितना स्पष्ट कहा है कि_

"हिमालयं समारभ्य यावदिन्दु सरोवरम्।_तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते ।।"

अर्थात् हिमालय पर्वत से कन्या-कुमारी तक विस्तृत देवनिर्मित पवित्र देश को हिन्दु-स्थान कहते हैं। खेद है कि आज कतिपय अल्पज्ञजन हिन्दू जाति की उत्कृष्टता के प्रति द्वेषपूर्ण भावना से प्रेरित होकर हिन्दू शब्द को अर्वाचीन एवं मुसलमानों के द्वारा प्रदत्त नाम करण कहने का असफल दुष्प्रयास करने लगे हैं। आश्चर्य है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी हिन्दु शब्द को अर्वाचीन एवं चोर गुलाम आदि निन्दित अर्थों वाला कह कर हिन्दू के स्थान पर आर्य कहने का प्रचार किया है। यह सत्यार्थप्रकाश से ज्ञातव्य है।

कतिपय लोगों का कहना है कि फारसी के शब्दकोश में हिन्दू शब्द का प्रयोग इसी निन्द्य अर्थ में किया गया है तथा यह भी कहा जाता है कि हिन्दू शब्द प्राचीन ग्रन्थों में कहीं नहीं उपलब्ध है इत्यादि।

फारस देश के महाकवि "मसनवी मौलाना रूम ने अपने दोयम में एक स्थल पर कहा है कि—

"चार हिन्दु दर इके मस्जिद शुदन्द।—वहिरे न उस एक ओ मस्जिद शुदन्द॥"

इस शेर का भाव मौलवी वहरुल्ला साहिब ने इस प्रकार दिया है कि हिन्दुस्थानी मुसलमान एक मस्जिद में गए इबादत के लिए सिजदा करने लगे।

उन्होंने भारतीय मुसलमानों को हिन्दू माना है उनके उक्त ग्रन्थों से स्पष्ट है हिन्दू जाति के प्रति उक्त ग्रन्थ में कितनी आदर भावना भी व्यक्त की। फारसी कोष के आधार पर यदि हिन्दू शब्द का निन्द्य अर्थ "दुर्जनतोषन्यायेन" स्वीकार भी कर लिया जावे तो विमत होने के कारण कथमपि मान्य नहीं हो सकता है संस्कृतकोष में मुसलमान को म्लेच्छ कहा गया है क्या यह मुसलमानों को मान्य हो सकता है।

इस कारण किसी भाषा के कोष के आधार पर किसी दूसरी भाषा के शब्दों के अर्थ को मान्यता नहीं दी जा सकती है। हिन्दू शब्द का अर्थ संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर ही मान्य कहा जावेगा।

संस्कृत का शरीर देह वाचक है। फारसी में इस शब्द का अर्थ शरारती होता है। इसी प्रकार एक भाषा का शब्द दूसरी भाषा में प्रयुक्त होने पर समानार्थक कभी नहीं हो सकता है।

हिन्दू शब्द का अर्थ संस्कृत साहित्य में क्या है? किन-किन प्राचीन ग्रन्थों में इसका प्रयोग उपलब्ध हो रहा है? इत्यादि विचारणीय है। इस विषय में निम्नांकित ग्रन्थों के प्रमाण दृष्टव्य हैं।

१- हिन्दू-धर्म प्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्तिनः। हीनञ्च दूषयत्येव स हिन्दुरुच्यते प्रिये।
—मेरु तंत्र प्रकाश १।२२

२- अवनी यवनैः क्रान्ता हिन्दवो विन्ध्यमाविशन्। (कालिकापुराण)

३- हिनस्ति तपसा पापान् दैहिकान् पुष्ट मानसान्। हेतिभिः शत्रुवर्गांश्च स हिन्दुरभिधीयते। (परिजातहरणनाटक)

४- हिन्दुर्दुष्टनृहः प्रोक्तोऽनार्यनीतिविदूषकः।
सद्धर्मपालको विद्वान् श्रौतधर्मपरायणः। (रामकोष)

५- हीनं दूषयति इति हिन्दू जाति विशेषः। (शब्दकल्पद्रुम)

६- हिन्दु हिन्दूश्च संसिद्धौ दुष्टानां च विधर्षणे। (अद्भुतकोष)

७- हिन्दू हिदुश्च हिन्दयः। (मेदिनी कोष)

८- हिंऽक्रण्वती..........दुहामश्विभ्याम्। (अथर्ववेद ७/७३/८ तथा ९/१०/५)

९- नेता सिन्धूनाम्.............. । (ऋग्वेद ७/५/२)

१०- सिन्धुपतिः क्षत्रियः। (ऋग्वेद ७/६४/३)

११- सिन्धौ अधिक्षियत। (ऋग्वेद ४/१२६/१)

वैदिक साहित्य में संकार के स्थान पर हकार का प्रयोग भी अभीष्ट रहा है निरुक्त १/३ यास्काचार्य ने "हरितो न रंह्याः_अ० वेद २०/३०/४ मन्त्र की व्याख्या करते हुए लिखा है कि "सरितो हरितो भवन्ति सरस्वत्यः हरस्वत्यः" । अर्थात् सरित (नदी) को हरित तथा सरस्वती को हरस्वती समानार्थक वेद में मानना अभीष्ट है ।

इसी प्रकार वेद के अनेक स्थलों पर सकारनिष्ठ एवं हकारनिष्ठ दोनों प्रकार के प्रयोग उपलब्ध होते हैं । ऋग्वेद १०/७५/५ में सरस्वती शब्द सकारनिष्ठ तथा ऋग्वेद २/२३/६ में हरस्वती शब्द हकारनिष्ठ प्रयुक्त हुआ है । यजुर्वेद ३१/०२ में श्री शब्द सकारनिष्ठ तथा कृ० य० तै० ३१/१ में ह्री शब्द हकारनिष्ठ है । इसी प्रकार अनेक शब्दों का प्रयोग हकार एवं सकारनिष्ठ हुआ है ।

हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में भी इसी नियम के आधार पर केसरी शब्द को हकार निष्ठ केहरी, मास को माह, सप्ताह का हफ्ता आदि दोनों प्रकार से व्यवहार सर्वजन विदित ही है ।

उपर्युक्त ऋग्वेद के मंत्रांशों में भी सकारनिष्ठ शब्द हकारनिष्ठ "हिन्दू नाम" "हिन्दुपति" हिन्दौ" इत्यादि शब्द हिन्दु जाति के लिए प्रयुक्त उपलब्ध होते हैं ।

उक्त विवेचना से स्पष्ट है कि हिन्दू शब्द वैदिक परम्परा के अनुसार हिन्दु जाति का परिचायक है । जिसका प्रयोग वेद, पुराण, काव्य, तथा कोष आदि प्राचीन ग्रन्थों में यथास्थान किया गया है अतः हिन्दु को अर्वाचीन मानना अथवा मुसलमानों के द्वारा प्रयुक्त समझना सर्वथा अज्ञान मूलक ही सिद्ध होता है । यदि हिन्दू नाम अपमान करने के लिए मुसलमानों द्वारा प्रदत्त समझा जाता है तो जाति धर्म एवं देश के प्रति स्वाभिमानी महाराज पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, शिवाजी, वीर क्षत्रसाल और गुरु गोविन्द सिंह अपने को हिन्दु कहने में गौरव का अनुभव न करते ।

हिन्दी भाषा के आदि कवि चन्दवरदायी ने पृथ्वीराज रासो में—"धन हिन्दू पृथ्वीराज जिसे रजवट्ट उजारिय । धन हिन्दू पृथिराज बोल कलि मजूझ उजारिय" ।

इसी प्रकार महाकवि भूषण के अमर काव्य में भी हिन्दुत्व का गौरव विशद रूप से वर्णित द्रष्टव्य है ।

वीर सावरकर ने हिन्दुत्व नामक पुस्तक में पृष्ठ ९ से ११ तक हिन्दु शब्द के प्रसंग में यह प्रमाणित किया है कि हिन्दु शब्द आर्यों के पूर्व ही प्रचलित रहा है इस कारण हिन्दु शब्द को अर्वाचीन बताने वालों के पास कोई भी प्रमाण अथवा युक्ति संगत उत्तर नहीं है ।

अतः हिन्दू शब्द वैदिक परम्परा से प्राप्त गौरव पूर्ण अर्थ में हिन्दु जाति के लिए प्रयुक्त किया जाता रहा है । हिन्दुत्व की रक्षा का तात्पर्य वैदिक संस्कृति की रक्षा समझकर तदर्थ प्रत्येक हिन्दू को प्रयत्नशील होना आज के युग में परम आवश्यक है । यह कार्य ही भारत राष्ट्र हिन्दुस्थान के प्रति देश-भक्ति का परिचायक कहा जा सकता है ।

●●●

तारसप्तकम्

--डा० गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री
एम. ए., साहित्याचार्य, पी-एच. डी.

१. मैत्री

पश्यन्तो ये स्मित - मधुरसैः स्वागतं व्याहरन्ते,
पृष्ठे दक्षा कुटिल-दशने घ्नन्ति पार्श्वागतान् ये ।
येषा - मन्तर्गरल - मनिशं वर्धते पायसेन,
तेषां मैत्री कथमिह भवेत् प्रेयसे श्रेयसे वा ।।

देखते ही जो मीठी मुस्कान से स्वागत करते हैं पर जो पीठ पीछे कुटिलता से काट खाने में दक्ष हैं, जो पास आने वाले को मार देते हैं, खीर खाने से जिनके अन्तर का विष बढ़ता है, उनकी मित्रता इस संसार में कैसे प्रिय और कल्याणकारी हो सकती है ।

२. परीक्षा

काचः केवलमेव विस्मयकरोऽयं रत्नहारोऽथवा,
भेत्तुं यत्र न दृष्टिरस्ति, निपुणा सम्यक् परीक्षाकृताम् ।
सम्मानं परिरक्षितुं, परिवृढः कश्चिन्मणिस्तत्र चेद्,
अन्तलीन - चमत्कृति - व्यतिकरः कालं नयेत् कन्दरे ।।

'यह चमत्कारी काँच है या रत्नहार' । जहां परीक्षकों की दृष्टि यह परखने में भली प्रकार निपुण न हो, वहाँ यदि कोई मणि, अपने सम्मान की रक्षा करने में सतर्क है तो उसे चाहिए कि अपने चमत्कार की विशेषताओं को समेट कर किसी कन्दरा में समय काटे ।

३. विवेकः

यावत् क्षीरगुणैः पयः प्रतिदिनं विक्रीयते स्वार्थिभिः,
तावद् बालहितं जले विनिहितं कुर्युः किमालोचकाः ।
धैर्येणार्यजना नयन्तु समयं को नाम जानाति यत्,
नीरक्षीर - विवेकिनामपि पतेद् दृष्टि र्द्विजानामिह ।।

जब तक दूध के गुणों के नाम पर स्वार्थी लोग प्रतिदिन पानी बेचते रहेंगे तब तक बालकों का हित जल (जड, अज्ञानियों) पर ही निर्भर करेगा । आलोचक क्या कर लेंगे । फिर भी सत्पुरुष धैर्य रखें, कौन जानता है, कभी नीरक्षीर का विवेक करने वाले द्विजों (हंसों, ज्ञानियों) की दृष्टि इधर भी पड़ जाए ।

४. उद्धारः

स्वार्थ प्रेरित मानसेन यदि सद्बुद्धिः सतां हीयते,
न्यायो मोह मद प्रभाव विहितच्छिद्रेण संक्षीयते ।
कालं प्राप्य विवेकिनां परहिते मन्दीयते चेन्मतिः,
उद्धर्तुं क्षमते तदा भुवि तले कः संस्कृतिं संस्कृतम् ।।

स्वार्थ की प्रेरणा से यदि सत्पुरुषों की सुबुद्धि दूषित हो जाती है तो मोह मद के प्रभाव से बने छिद्र के द्वारा न्याय नष्ट हो जाता है। समय पर विवेकी जनों की बुद्धि यदि परहित के लिए शिथिल हो जाएगी तब पृथ्वी पर कौन है जो संस्कृति और संस्कृत का उद्धार कर लेगा।

५. परिचयः

रक्तस्नाता धरेयं विपदि परिगतं मानसं मानवानाम्,
सम्मानं सज्जनानां क्वथितमिह खलै दुष्कृतोद्दामतापैः।
धर्मव्यापारकेन्द्रेष्वनिशमपधनैः क्रीयते धर्मदीक्षा,
सत्यं स्वार्थे विलुप्तं किमिह परिचितं वर्तते ते बसन्त !

यह भूमि रक्त से स्नान किए है। मानवों का मन विपत्ति में डूबा है। दुर्जन अपने दुष्कृत्यों के अत्यन्त ताप में सज्जनों का सम्मान उबाल रहे हैं। धर्मव्यापार केन्द्रों पर पापाचार से अर्जित धन द्वारा धर्मदीक्षा का निरन्तर क्रय हो रहा है। सत्य स्वार्थ में लुप्त हो गया है। तो हे बसन्त ! यहाँ तुम्हारा क्या परिचित रह गया है ?

६. स्वागतम्

कृष्णार्थक्रीतदासश्चरति बहुजनो देश-कालं विहाय,
दिक्षु व्याप्ता विनोदं मनसि वितनुते काकली वायसानाम्।
मञ्जर्यो वै करीरे विकचमनुभवन्त्याम्रकुञ्जानुपेक्ष्य,
कुण्ठाक्रान्तं कवित्वं रतिरुपलमतिः स्वागतं ते बसन्त् !

यह समाज देश काल को भूलकर काले धन का क्रीतदास हो रहा है। हर दिशा में व्याप्त कौओं की काकली मन को आनन्द दे रही है। आम्रकुन्जों को छोड़कर मञ्जरियाँ करील और बबूल पर खिल रही हैं। कविता को कुण्ठा ने जकड़ लिया है। प्रेम पाषाण हो गया है। तो, आओ बसन्त ! यहाँ तुम्हारा स्वागत है।

७. स्वर्ग भूमिः

नद्यो वै स्वल्पतोया जगति परिचितं दूषितं गाङ्गमम्भः,
स्वल्पक्षीरो विपन्नः श्वसिति कथमपि प्रायशो धेनुवर्गः।
नित्यं भूनाशदक्षो पतति घनघनं वृक्षमूले कुठारः,
वायुः श्वासाय नालं तदपि तव सखे ! स्वागतं स्वर्गभूमौ ।।

नदियों में मामूली जल रह गया है। विश्व में परिचित गंगाजल दूषित हो गया है। विपत्ति ग्रस्त, अल्प दूध देने वाली गायें किसी प्रकार श्वाँस ले रही हैं। पृथ्वी के विनाश में दक्ष कुल्हाड़ी वृक्ष की जड़ पर दनादन पड़ रही है। वायु श्वास के लिए भी पर्याप्त नहीं रह गयी हैं, फिर भी मित्र ! तुम्हारा स्वर्ग भूमि पर स्वागत है।

★★★★
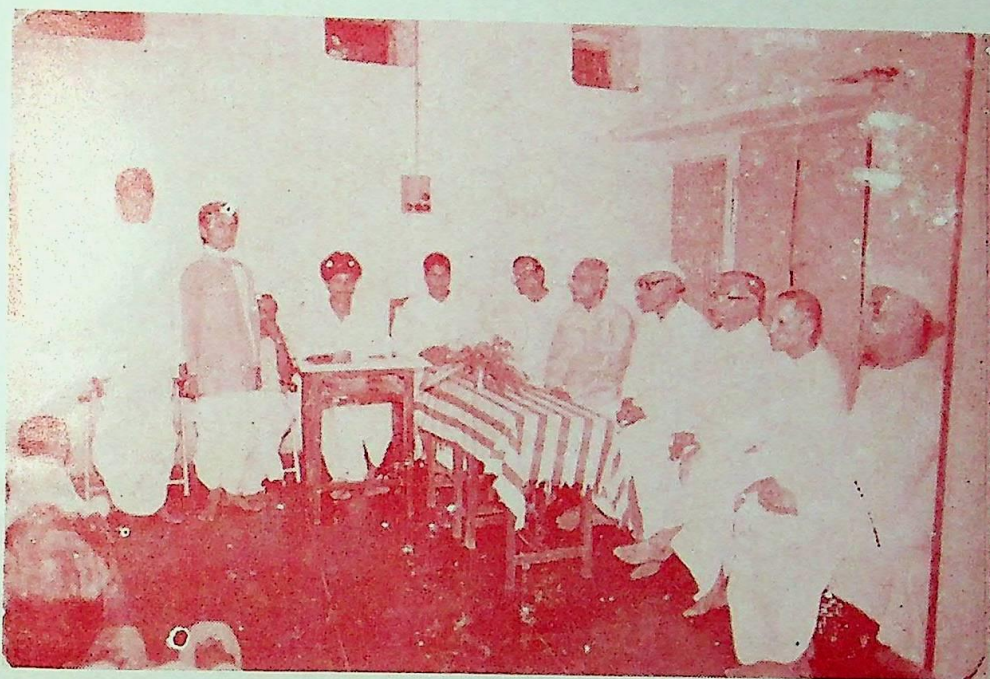
विद्यालय के उत्सव पर्व

१५ अगस्त राष्ट्रीय पर्व पर अतिथिजनों के सन्मुख वेद पाठ करते हुये छात्रद्वय

वसन्तोत्सव पर्व पर विद्यालय की ओर से श्रीमती सावित्री देवी वेदाचार्य का अभिनन्दन करते हुये मन्त्री श्री रामकुमार खण्डेलवाल

विद्यालय के शुभचिन्तक

डा० श्रीमती उषा मिश्रा, प्रधानाचार्य
रिखी सिंह कन्या इण्टर कालेज, बरेली
(इस वर्ष राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार मिला है)

पं० जगदीश प्रसाद शर्मा
वयोवृद्ध पण्डित

प्रो० डा० रमाकान्त शर्मा 'मधुव्रत'
नगर के प्रतिष्ठित पण्डित
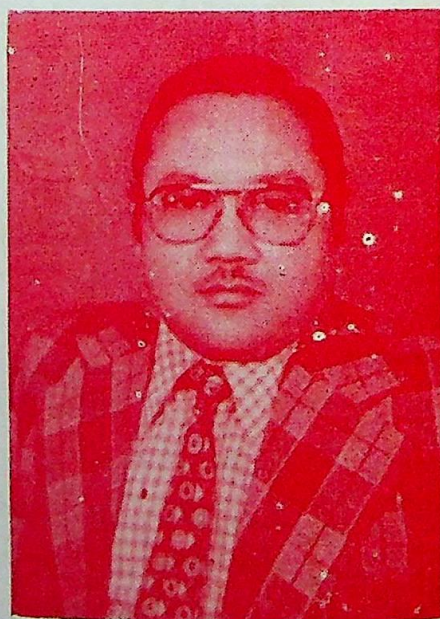
श्री शिवकुमार अग्रवाल
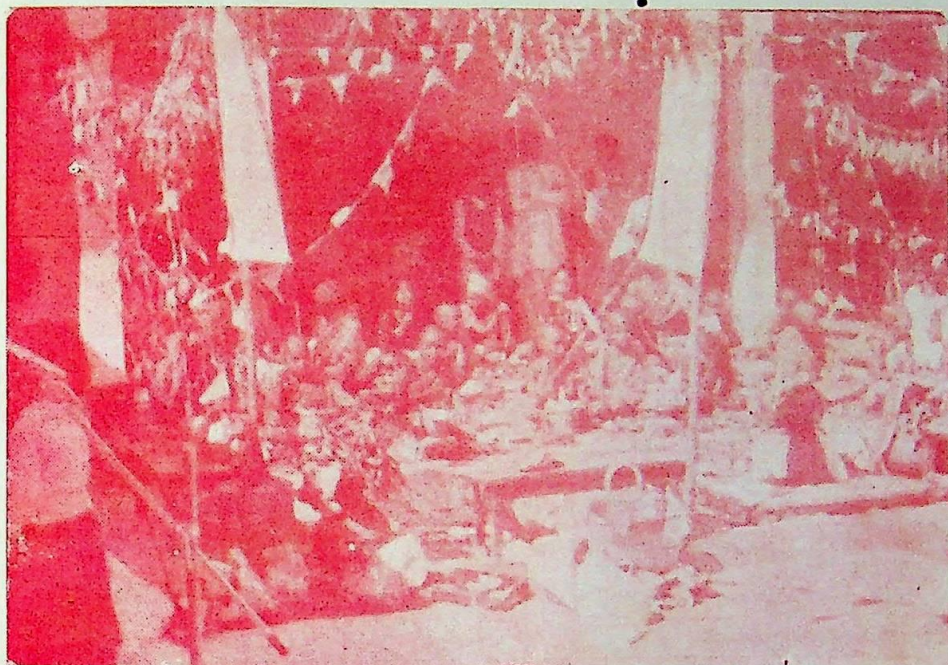
बसन्तोत्सव पर सामूहिक छात्र यज्ञोपवीत का दृश्य

उपवीत छात्रों द्वारा सदण्ड सूर्य नमस्कार

यज्ञोपवीत संस्कार मे भिक्षादान का दृश्य
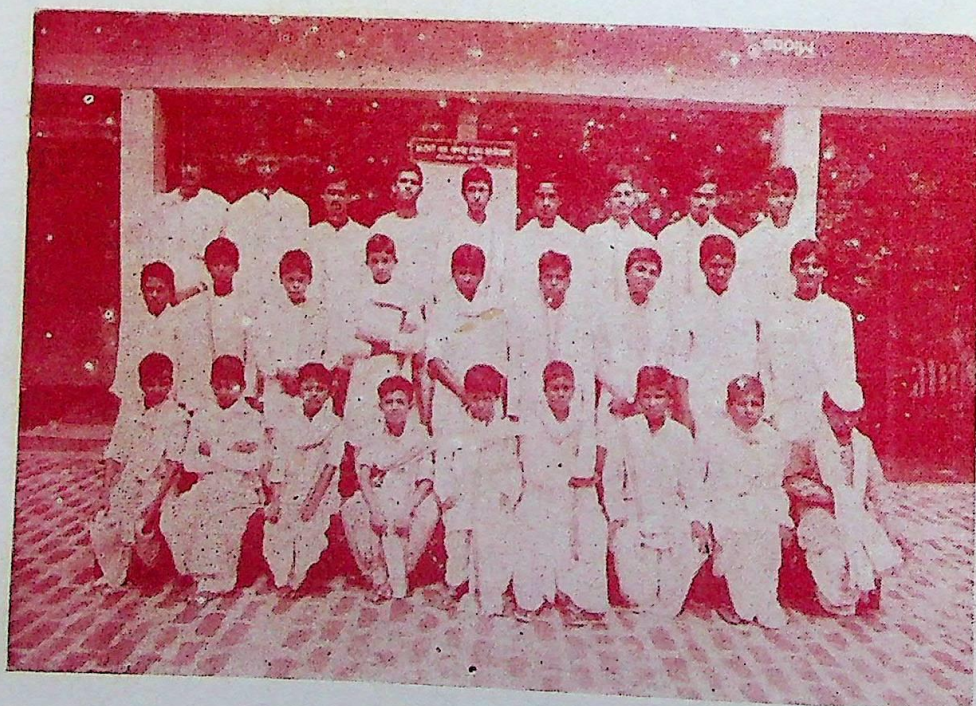
विद्यालय छात्र वर्ग

साम्प्रदायिक सौमनस्य की सेतु संस्कृत

–डा० ज्योति स्वरुप
३५/जे-६ रामपुर बाग, बरेली।

एतद्देश - प्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मनः
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन्, प्रथिव्यां सर्वमानवाः

देववाणी का उपरोक्त छन्द उसकी प्राचीनता सार्वभौमिकता तथा सर्वज्ञता का उद्घोष है। अपौरुषेय वेद शास्त्र पुराण ब्राह्मण ग्रन्थ वेदान्त आदि ज्ञान विज्ञान की विधियाँ 'सर्वभूत हितेरत', 'वसुधैव कुटुम्बकम्', जैसे सुभाषित इस भाषा में ही सुरक्षित हैं। जिसकी प्रशंसा विश्व के उद्भट विद्वानों द्वारा की गयी हैं। जर्मनी के प्रकाण्ड संस्कृत वेत्ता मैक्समूलर के शब्दों में The greatest language in the world the most wonderful and most perfect देववाणी संस्कृत की महत्ता को उजागर करते हैं।

संस्कृत भाषा के आदि कवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा निःसृत आदि श्लोक में प्राणिमात्र के लिये अपूर्व करुणा का सागर उद्वेलित है जिसमें आदि कवि के हृदय में क्रीडारत क्रौच युगल में से बहेलिये द्वारा एक पक्षी को बाण से घायल कर दिया था और जो ऋषि के समक्ष तड़प रहा था उस दृश्य को देखकर वह विचलित हो गये और उनके मुख से सहसा सरस्वती फूट पड़ी :—

"मानिषाद प्रतिष्ठां त्वमगमाः शाश्वतीः समाः।
यत् - क्रौंच मिथुनादेकमवधीः काम्मोहितम् ॥"

महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण विश्व का प्रसिद्ध उपजीव्य काव्य है। जो युग-युग से आज तक कितनी ही भाषाओं के साहित्य रचना का निर्देशक एवं प्रेरणा स्रोत रहा है। महर्षि बाल्मीकि की उदात्त शैली को कालिदास ने अपनी रचनाओं में आत्मसात् किया था। कालिदास की कविता वास्तव में देव वाणी का श्रृंगार है जिसमें हृदय पक्ष की प्रबलता है जिसका उदाहरण निम्न श्लोक में दृष्टव्य है :—

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया।
कण्ठः स्तम्भित वाष्पवृत्ति कलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् ॥
वैक्लव्यं मम तावादीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः।
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेष दुःखैर्नवै ॥

विवाहोपरान्त पिता के मन में अपनी पुत्री के बिछुड़ने की मार्मिक वेदना कश्यप ऋषि के द्वारा उक्त श्लोक में व्यक्त हुई है। ऋषि द्वारा शकुन्तला को दिये गये उपदेश में स्त्रियोचित शाश्वत मूल्यों को कितने सुन्दर ढंग से कहा गया है।

शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने।
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मास्म प्रतीपं गमः ॥
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येस्वनुत्सेकिकनी।
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाकुलस्याधयः ॥

कालिदास द्वारा रचित श्लोक में निहित उपदेश हर स्त्री को गाँठ बांधने योग्य है अपने इन्हीं शाश्वत मूल्यों के लिए जर्मन दार्शनिक गेटे ने अभिज्ञानशाकुन्तल की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

सर्वश्रेष्ठ उत्तम साहित्य के अतिरिक्त अर्थशास्त्र नीतिशास्त्र समाज शास्त्र ज्योतिष-शास्त्र कृषि वास्तु रसायन दर्शन गणित चिकित्सा शास्त्र आयुर्वेद तथा अणु-परमाणु जैसे विविध विषयों का संस्कृत में विशद विवेचन और वर्णन हुआ है। आधुनिक युग के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा की एक विशेषता यह है कि भाषायी समस्याओं को दूर करके समस्त देश में भावात्मक एकता स्थापित करने में इस भाषा का योगदान महत्वपूर्ण है। भाषा - वैज्ञानिक दृष्टि से देश की अधिकतर क्षेत्रीय भाषाओं की जननी है। प्रान्तों की भाषाओं में संस्कृत के अधिकतर शब्द उपलब्ध हो जाते हैं। उर्दू भाषा की कथित जननी अरबी और फारसी दोनों की संस्कृत से बहुत समानता है। जो प्रधान है और विश्व के भाषा परिवारों में यह सब एक ही कुल की मानी जाती है। संस्कृत के समान ही अरबी भाषा में भी मूल धातु होती है। और उन्हीं से शब्दों की सृष्टि होती है और संस्कृत के समान ही रूप चलते हैं। एक उदाहरण देखिये :—

३ अक्षरों की मूल धातु क त व से किताव कुतुव कातिव मकतव आदि शब्द बनते हैं। क त ल से कतल कातिल कितल मक्तूल आदि शब्द बनते हैं। इस प्रकार की समानता फारसी में भी है। जैसे :—पितृ-पिदर मातृ-मादर भ्रातृ-विरादर आदि। जब हम पाते हैं कि देश की सब भाषाओं में एकरसता पाई जाती है। और संस्कृत सबके साथ जुड़ी हुई है तो स्वतः हम सब एक सूत्र में बंध जायेंगे इसलिए अव संस्कृत भाषा का प्रसार प्रचार रेडियो दूरदर्शन आदि माध्यमों से जनता तक पहुचाने का कार्य प्रारम्भ हुआ है।

उपरोक्त तथ्यों एवं संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह स्पष्ट है कि वह मात्र लोक व्यवहार अथवा जगत व्यवहार चलाने की भाषा नहीं है अपितु इसमें पूर्व पुरुषों द्वारा अर्जित ज्ञान-विज्ञान की विधियाँ सुरक्षित हैं। जो किसी भी जाति राष्ट्र के लिए ग्रर्व एवं गौरव की वस्तु तथा विषय है। उसका बहुलांश मानव मात्र के लिए उपयोगी एवं हितकारी है। अपने इसी रिक्थ (सम्पत्ति) के सहारे आज भी संस्कृत भाषा जीवित बनी हुई है। और भविष्य में भी बनी रहेगी।

इसी भाषा में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थ समाहित हैं इसीलिए यह भाषा विशिष्ट एवं अद्वितीय है। जब तक मनुष्य में ज्ञान-विज्ञान की जिज्ञासा तथा पिपासा बनी रहेगी तब तक संस्कृत भाषा तथा साहित्य का महत्व तथा माहात्म्य अक्षुण्ण बना रहेगा। जीवन और जगत के विषय में जितना गहन एवं गम्भीर चिन्तन इसके द्वारा उजागर है उतना किसी एक भाषा में सुलभ नहीं है ऐसी समृद्ध तथा जीवन्त भाषा की उपेक्षा अथवा अनदेखी करना आत्महत्या जैसा जघन्य अपराध है।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।

****

कामयेऽहम्

—डा० कृष्ण कान्त शुक्ल
संस्कृत विभागाध्यक्ष बरेली कालेज बरेली

(१)

अहो ! यत्र देवाः स्वकीय निवासं
परित्यज्य नूनं जनिं कामयन्ते।
शिवाराधनैकाग्रचित्ते प्रहृष्टे
प्रफुल्ले स्वदेशे जनिं कामयेऽहम् ।।

अहो ! देवगण भी अपना निवास को छोड़कर जिस पवित्र भारत देश में जन्म लेने की इच्छा करते हैं, तथा श्री शंकर जी की आराधना में एकाग्रचित्त वालों के हर्ष से समन्वित जो यह हमारा देश है उसी प्रसन्नतामय वातावरणान्वित अपने देश में मैं जन्म की कामना करता हूं।

(२)

दयाशील शोभा सदाचार युक्ते
घृणाद्वेष मात्सर्य पारुष्य मुक्ते।
प्रभोः केलि लीला बिहारे मनोज्ञे
विशिष्टे स्वदेशे जनिं कामयेऽहम् ।।

दया-शील, शोभा और सदाचार से युक्त, घृणा-द्वेष-मात्सर्य और कठोरता से मुक्त प्रभु की क्रीडा-लीला की सुन्दर स्थली विशिष्ट अपने देश में मैं जन्म की कामना करता हूं।

(३)

अपारं सुखं वैभवं चैव हित्वा
नृपा यत्र सम्यग् विरागं भजन्ते।
प्रजा पालकैर्नित्य लोकाऽनुरक्तैः
समृद्धे स्वदेशे जनिं कामयेऽहम् ।।

अपार सुख और वैभवों का परित्याग करके राजागण जहां वैराग्य धारण करते हैं एवं नित्य लोकाऽनुरक्त प्रजापालकों से समृद्ध इस अपने देश में मैं अपने जन्म की कामना करता हूं।

(४)

सदा न्याय रक्षाविधानैकदक्षे
परार्तिप्रणाशाय वै बद्धकक्षे।
स्व-वीर्येण गुप्ते प्रकर्षेण युक्ते
प्रचण्डे स्वदेशे जनिं कामयेऽहम् ।।

सदा न्याय रक्षा-विधान में दक्ष दूसरों के कष्ट-नाश के लिए कटिबद्ध, स्वशक्ति से रक्षित प्रकर्ष-युक्त प्रचण्ड इस देश में मैं जन्म की कामना करता हूं।

(५)

गुणानां गणा यत्र पूजां भजेयु-
र्धनं पक्षपातादयोऽस्तं व्रजेयुः।
समाना च प्रीतिर्भवेत्तादृशेऽस्मिन्
गुणज्ञे स्वदेशे जनिं कामयेऽहम् ।।

जहां गुण-गण पूजा को प्राप्त करें, धन-पक्षपात आदि नाश को प्राप्त करें, जहां सब पर समान प्रीति का व्यवहार हो ऐसे गुणज्ञ अपने देश में मैं जन्म की कामना करता हूं।

(६)

महाधैर्ययुक्ता जना यत्र नित्यं
स्वकीयेषु धर्मेषु सक्ताः सतोषम्।
प्रियै र्भक्ति भावैः समुद्वेलितेऽस्मिन्
नुदारे स्वदेशे जनिं कामयेऽहम् ।।

जहाँ नित्य रूप से महा धैर्यशाली लोग सन्तोष के साथ अपने धर्म में आसक्त हैं, तथा जो देश मनोहर भक्ति भावों से समन्वित है ऐसे उदार अपने देश में जन्म की कामना करता हूं।

वर्तमान शिक्षा में संस्कृत की आवश्यकता

–प्रवीण कुमार उपाध्याय, प्रधानाचार्य
श्री टीबरीनाथ सांङ्गवेद संस्कृत म० वि० बरेली

लोक तंत्र केवल एक शासन विधि का नाम नहीं हैं वास्तव में यह एक सर्वाङ्गीण जीवन दर्शन है। इस जीवन दर्शन का सर्वोपरि सत्य "जन,, है, और जन तंत्रात्मक समाज व्यवस्था हेतु शिक्षा का प्रथम स्थान है।

सन् १८३५ में "लार्ड मेकाले" ने अंग्रेजी को अनिवार्य करके नयी शिक्षा पद्धति चलायी फिर अंग्रेजी भाषा विद्वत्ता एवं सभ्यता का पर्याय बनने लगी। यद्यपि तिलक गोखले, विवेकानन्द, मालवीय आदि ने स्वतंत्रता प्राप्ति एवं गोरों के चले जाने के बाद भी हम आंखों पर लगी गोरी संस्कृति का चश्मा न उतार पाये।

सन् १९८५ में "नयी शिक्षा नीति सलाहकार समिति" ने उस कार्य को पूर्ण करने की योजना बनायी जिसे मैकाले न कर सका था। त्रिभाषा-सूत्र में संस्कृत के लिए कोई स्थान नहीं रखा गया। इस नीति के अनुसार मातृ भाषा के अतिरिक्त प्रत्येक छात्र को अंग्रेजी अनिवार्य, साथ ही एक आधुनिक भारतीय भाषा पढ़नी है तथा जो आधुनिक भारतीय भाषाओं की सूची दी गयी, उसमें संस्कृत का उल्लेख नहीं है।

संस्कृत अनादि काल से राष्ट्रीय एकता, ज्ञान-विज्ञान, नैतिकता एवं संस्कृति की पोषिका रही है। न केवल समग्र भारत प्रत्युत संसार इसे समादर की दृष्टि से देखता है। इसे प्रोत्साहित करके संभवतः हम भाषावाद को समाप्त करने में अवश्य ही सक्षम होंगे, साथ ही अपनी सांस्कृतिक धरोहर को भी अक्षुण्ण बनाने के साथ-साथ उसका विकास करने में भी सहयोगी सिद्ध होंगे। क्योंकि वेद, उपनिषद, बौद्ध, जैन दर्शन, पाणिनीय व्याकरण, काव्य शांकर अद्वैत, विशिष्टाद्वैत सभी कुछ संस्कृत में सुरक्षित हैं। और इस प्रकार हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य लोग भी इस विशाल साहित्य का उपयोग अवश्य उठाना चाहेंगे।

हिन्दी ही नहीं देश की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत ही है एवं मूल अथवा परिवर्तित रूप में बड़ी मात्रा में संस्कृत शब्द विभिन्न भाषाओं में समाविष्ट है। संस्कृत के माध्यम से विभिन्न नवीन शब्द निर्माण संभव है तथा इसी पर आधृत है --युग की प्रगति। अरेबिया तक फैले अखण्ड भारत का समग्र प्राच्य साहित्य सुर भारती में ही निबद्ध है।

विज्ञान, कला, गणित, सांख्यिकी, इतिहास, भूगोल, खगोल, धर्मशास्त्र, विधि, निषेध, ज्योतिष, चिकित्सा विज्ञान, मनोविज्ञान, तर्क शास्त्र, राजनीति, शिल्प और स्थापत्य, परमाणु विज्ञान (ब्रह्मास्त्र) नाट्य, नाटक, काम शास्त्र, भौतिक विज्ञान आदि सभी कुछ संस्कृत में था और है। संस्कृत भारतीय मनीषा के परमोत्कर्ष की एक मात्र प्रत्यक्ष साक्षी है। इस अमूल्य निधि का तिरस्कार सर्वथा अनुचित है। हमारे माननीय भू० पू० शिक्षा मन्त्री का इस संदर्भ में

कहना है कि—"हिन्दी भाषी लोग दक्षिण भारतीय भाषा न पढ़कर संस्कृत पढ़ते है इसलिए भाषाओं की सूची से उसे (संस्कृत) को हटा दिया गया है।"

इस संदर्भ में दक्षिण की किसी भाषा का अध्ययन अनिवार्य कर देना उचित था, न कि अविचारित निर्णय लेना।

कपिल कणाद, चरक, भास्कराचार्य (द्वितीय) जिन्होंने न्यूटन से ५०० वर्ष पूर्व पृथिवी में गुरुत्वाकर्षण होने की कल्पना की थी खगोल शास्त्री-बाराह मिहिर, रसायन शास्त्री-नागार्जुन, विमान विद्याजनक-भारद्वाज, "पृथिवी सूर्य की परिक्रमा करती है" इस सिद्धांत के प्रतिपादक आर्य भट्ट जैसे वैज्ञानिकों पर क्या हमें गर्व नहीं है ? क्या ये सब जाति विशेष की धरोहर हैं ? क्या उनका जीवन उनके विचार हम सब भारतवासियों को भुला देने योग्य हैं ?

कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए माध्यम-भाषा के रूप में एम० ए० एस० ए० के वैज्ञानिकों ने संस्कृत को सर्वश्रेष्ठ भाषा के रूप में चुना है। पाश्चात्य देशों में इस दिशा में गहन शोध कार्य हो रहे हैं। "नालेज इन्जीनियरिंग" नामक एक नयी शाखा की स्थापना अभियांत्रिकी के क्षेत्र में हुई है, जिसमें प्राप्त ज्ञान के स्वरुप, उसे व्यक्त करने की भाषा, एवं उसके व्यावहारिक रूप_इन तीनों पक्षों पर संस्कृत के भीमांसा शास्त्र एवं व्याकरण शास्त्र में विशद चर्चा एवं व्याख्या हुई है। अत: संगणक (कम्प्यूटर) को मानव मस्तिष्क के समान विचार एवं विवेकपूर्ण निर्णय के लिए सक्षम बनाने की दृष्टि से पाश्चात्य देशों में संस्कृत के उक्त शास्त्रों पर व्यापक अनुसंधान चल रहा है। इसी संदर्भ में भारत में भी १८ से २२ दिसम्बर १९८६ तक बंगलौर में "नालेज रिप्रेसेन्टेशन एण्ड इनफेन्स संस्कृत" विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो चुका है। अत: देश को २१वीं सदी के संगणक जगत में जाने के लिए संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था होनी ही चाहिये।

विश्व भर के महान अभियान्त्रिकी 'वैज्ञानिकों' ने यह मत व्यक्त किया है—"संगणक द्वारा ठीक परिणाम प्राप्त करने में वैदिक गणित का उपयोग अपेक्षित और अपरिहार्य होगा।"

उचित यही होगा कि प्रत्येक भारतीय को अनिवार्यत: संस्कृताध्ययन सुलभ कराया जाय चाहे वह किसी सम्प्रदाय धर्म का हो क्योंकि संस्कृत न केवल एक समृद्ध भाषा है अपितु इसका अपना ऐतिहासिक तथा वास्तविक मूल्य भी है जिसे कोई भी नकार नहीं सकता।

वस्तुत: संस्कृत समग्र देश के प्रांतों की सम्पर्क भाषा बनने के योग्य है और प्रादेशिक भाषाओं की 'उपजीव्य भी'। इस पर हमें गर्व होना चाहिये, और इसका विकास कर हमें अपने देश में एकता और विश्व में भारत के उदात्त चरित्र को स्थापित करते हुए प्रयास करना चाहिये कि यह विश्व की सम्पर्क भाषा बने। इससे हम न केवल अपना खोया हुआ आत्म गौरव पा सकेंगे प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व की सेवा भी कर सकेंगे।

"भारते भातु संस्कृतम्"

संस्कृत और उसका समृद्ध साहित्य

—श्री अम्बा दत्त पाण्डेय
अध्यापक, श्री टीबरीनाथ सांगवेद
संस्कृत महाविद्यालय, बरेली

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जब हम किसी देश अथवा उसकी संस्कृति से परिचित होना चाहें तो वहां के साहित्य का परिचय पहले प्राप्त करना होगा, भारत के संदर्भ में हमें उसके साहित्य के सम्यक् अध्ययन के निमित्त संस्कृत भाषा की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है, संस्कृत में भारत और भारतीयता के यथार्थ ज्ञान का भण्डार, निहित है।

वेद, उपनिषद्, पुराण, काव्य गद्य, नाट्य और संस्कृत के गीति साहित्य में जीवन के प्रत्येक अंग पर प्रकृति, आत्मा और मानवता के हर अंग पर गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया गया है, कतिपय पश्चिम प्रेमी भारतीय दर्शन की उपयोगिता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अप्रासंगिक कहते हुये नहीं अघाते हैं, किन्तु यह उनकी गम्भीर अपरिपक्वता का द्योतक है। वस्तुतः जिस आधार पर बैठकर पाश्चात्य दर्शन के मूल्यों की स्थापना की गई है वह भारतीय विचार-धारा पर ही केन्द्रित है।

ऋग्वेद में सृष्टि का विकास क्रम, आरण्यकों और उपनिषदों में विद्यमान उच्च-दार्शनिक ज्ञान, वेदान्त, दर्शन की अद्भुत परम्परा और शंकराचार्य का अद्वैतवाद, जैन बौद्ध धर्म के पंचशील जैसे सिद्धान्त संस्कृत भाषा की अद्भुत देन हैं।

(१) यह निर्विवाद रूप से आज स्पष्ट हो चुका है कि गणकीय अंक विद्या और दशमलव सिद्धान्तों का प्रकाशन सिन्धु नदी की घाटी में पर्याप्त रूप से प्रचलित हो चुका था, सुल्व-सूत्रों को कौन नहीं जानता ? ब्रह्मपुत्र वराहमिहिर, भास्कराचार्य, श्रीधर, महावीर और आर्य भट्ट जैसे गणितज्ञ, अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित के सिद्धान्तों से पूर्ण परिचित तथा निष्णात थे, यज्ञ वेदियों का विभिन्न रूपों में निर्माण वैदिक काल से ही गणकीय सिद्धांतों के प्रति भारतीय विद्वानों की गहन अध्ययन प्रवृत्ति का परिचायक है।

विश्व को भूमि के संचरण सम्बन्धी सिद्धान्त से सर्वप्रथम परिचय कराने वाले आर्यभट्ट ही तो थे, वराहमिहिर के पंच महाभूतों से निर्मित भूमि की रचना सम्बन्धी अवधारणा सूर्य-सिद्धान्त में सहज पायी जाती है।

पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के विषय में न्यूटन को सर्वाधिक स्थान दिया गया है किन्तु उनसे ६०० वर्ष पूर्व भास्कराचार्य ने इस सिद्धान्त के विषय में स्पष्ट घोषणा की है।

चिकित्सा क्षेत्र में जो नवीन-नवीन रोग आज उद्घाटित हो रहे हैं, उन सबका भारतीय आयुर्वेदाचार्य पहले ही निदान प्रस्तुत कर चुके हैं, ब्रह्मवैवर्तपुराण में आयुर्वेद की व्यापक परम्परा का इतिहास वर्णित है, जिसमें चतुर्वेदों से आयुर्वेद का निर्माण कर ब्रह्मा ने

अपने शिष्य भास्कर को पढ़ाया, कुष्ट, शल्य एवं नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में धन्वन्तरि और सुश्रुत अपने-अपने क्षेत्र में सिद्धहस्त थे।

आचार्य कणाद अपने समय के प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री थे, और वाचस्पति मिश्र द्वारा प्रतिपादित प्रकाश पिण्डों से परमाणु की सृष्टि का सिद्धान्त बहुत समय पहले भारत में प्रचलित हो चुका था, पारद के शोधन के सम्बन्ध में नागार्जुन सिद्धहस्त थे, रासायनिक तत्वों के विश्लेषण से घटित होने वाली प्रक्रिया सोमदेव नामक रासायनिक वेत्ता को बहुत पहले मालूम थी।

भारत में अधिक रसायन, यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र भौतिक संघटकों, वैज्ञानिक विचार धाराओं की परिकल्पना, हमारे ऋषिमुनियों द्वारा बहुत पहले ही प्रचलित हो चुकी थी, यही नहीं काम सूत्र भारतीय जनजीवन का एक ऐसा विख्यात ग्रन्थ है जो गर्भस्थ शिशु तथा उसकी जननी के शरीर सौष्ठव एवं रचना के विन्यास क्रम में विस्तृत और यौगिक क्रियाओं पर सूक्ष्मतम प्रकाश डालता है यह सब कुछ संस्कृत में ही लिखा गया है।

भारत में किसी समय इतनी विपुल साहित्य-सम्पदा विद्यमान थी जिसमें आततायिओं द्वारा लगायी गयी आग वर्षो जलती रही, फिर भी नीति, नाट्य काव्य, अलंकार, आदि के रूप में बिखरे अगणित, मुक्ता मणियों को अपने में समेटे हुये संस्कृत-भाषा को भारतीयता का पर्याय यदि कहा जावे तो अत्युक्ति पूर्ण न होगा।

उपदेशामृतम्

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।
धर्मान्न प्रमदितव्यम्। मातृ देवो भव। पितृ देवो भव।
आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव।

यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि।
यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्।

श्री टीबरीनाथ सांङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालय छात्र दिनचर्या

–संजीव कुमार 'अग्निहोत्री'
उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष

भारतीय ऋषियों एवं तत्व वेत्ताओं ने मनुष्य की अन्तर्भूमि को श्रेष्ठता की दिशा में विकसित करने के लिए कुछ ऐसे सूक्ष्म उपचारों का अविष्कार किया जिनका प्रभाव शरीर तथा मन पर ही नहीं अपितु सूक्ष्म अन्तःकरण पर भी पड़ता है और उसके प्रभाव से मनुष्य को गुण कर्म और स्वभाव की दृष्टि से समुन्नत स्तर की ओर बढ़ने में सहायता मिलती है। इस आध्यात्मिक उपचार का नाम हैं—संस्कार। शिक्षा की पतनशील अवस्था व संस्कारों की लुप्तता को दृष्टिगोचर करते हुए धर्म, कर्म गुण संस्कार के अभ्युत्थान हेतु तथा विषम परिस्थितियों में जीवन्त रखने का एकमात्र पर्याय है – श्री टीबरीनाथ सांङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालय जहाँ विभूति वैराग्याम्वर-धारण किये ज्ञान के अधिष्ठाता देवाधिदेव महादेव भारतीय शिक्षा-धर्म संस्कारादि को सुरक्षित बनाये रखने हेतु त्रिवटीनाथ (टीबरीनाथ) नाम से अपनी अहैतु की कृपा की छत्रछाया बनाये हुए हैं।

यद्यपि इस विद्यालय को स्थापित हुए अधिक समय नहीं हुआ तथापि जिस तीव्रता से यह विद्यालय उन्नति पथ पर अग्रसर है। वह स्पृहणीय है। धार्मिक प्रबन्ध समिति व कर्मठ तथा योग्य प्राचार्य/अध्यापकों की देखरेख में छात्रों की चहुंमुखी प्रगति के तत्वों को संजोये हुए जो दिनचर्या यहां प्रचलित है वह छात्रों में संस्कार तथा भविष्य हेतु पर्याप्त है।

प्रातः जागरण :

"ब्राह्मे मूहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्"। मनुस्मृति के इस वाक्य को ध्यान रख सभी छात्र प्रातः ४ बजे घंटी के संकेत से जगकर प्रातः स्मरण श्लोकों का पाठ करते हैं। तत्पश्चात विद्या-धन प्राप्ति हेतु छः बजे तक अध्ययन में समाधिरत हो जाते हैं।

संध्या एवं देवार्चन :

'अहरहः' सन्ध्यामुपासीत, श्रुति के अनुसार नित्य कर्म संध्या के माध्यम से भगवान भुवन भाष्कर की उपासना द्वारा परमार्थिक लाभ के अतिरिक्त लौकिक तेज बल आयु नेत्रों की ज्योति की वृद्धि हेतु विद्यालय में छः बजे से गुरुओं के साथ पंक्तिबद्ध कुशासन पर स्थित हो आचमनी पंच पात्र, अर्घा, गोमुखी, माला द्वारा संध्या प्रयोग सम्पन्न होता है। कुछ छात्र तो गंधाक्षत पुष्प जलधारा द्वारा त्रिवटीनाथ का अभिषेक कर विद्या प्राप्ति हेतु आशीर्वाद की प्रार्थना करने हेतु मंदिर जाते हैं।

योग :

संध्या के अनन्तर चित्त वृत्ति निरोध हेतु एवं शारीरिक व परमार्थिक वृद्धि लाभादि हेतु अन्यान्य योगासनों का नियमतः अभ्यास द्वारा विभिन्न लाभों को प्राप्त किया जाता है।

विद्याध्ययन :

क्योंकि विद्या प्राप्ति ही छात्र जीवन का सर्वोत्कृष्ट कार्य है अत: योगादि के पश्चात विद्यालय प्रारम्भ हो जाता है। जिसमें विभिन्न विद्वान गुरुओं द्वारा अन्यान्य विषयों का अध्यापन, गृह कार्य का निरीक्षण आदि कार्य सम्पन्न होता है।

जलपान :

विद्यालय व्यवस्थानुसार विद्यालयारम्भ से पूर्व अथवा मध्यावकाश में पंक्तिवद्ध क्रम से समय-२ पर परिवर्तित होने वाले पौष्टिक जलपान की व्यवस्था रहती है।

भोजन :

"भोजन जीवन का अभिन्न अंग है" भोजन के पौष्टिक तत्व मन, बुद्धि, बल, स्मृति आदि के परिपोषक होते हैं, इस वात को ध्यान में रखकर युक्ताहार व्यवस्था विद्यालय की ओर से छात्रों को प्रदान की जाती है। सभी छात्र और अध्यापक वस्त्र त्याग कर उत्तरीय धारण कर वैष्णव रीति से भोजन स्थल पर क्रमवद्धता से स्थित होते हैं। भोजन से पूर्व माता अन्नपूर्णा की स्तुति एवं भोजन मंत्रों से मण्डल गूंज उठता है। गोग्रास निष्काषित करने के उपरान्त भोजनार्थी भोजन प्राप्त करते हैं। परिवेशण कार्य अनुशासित छात्रों द्वारा परिवर्तित क्रम से परिपूर्ण होता है।

क्रीडा एवं उद्योग :

"शारीरिक एवं मानसिक पुष्टि हेतु क्रीडा आवश्यक है।" इस विद्यालय द्वारा क्रीडा के विभिन्न साधनों की व्यवस्था है। सायं समय विद्यालय से सटे हुए क्रीडा क्षेत्र में पहुँच कर छात्र क्रीडारत होते हैं। कुछ छात्र गुरुओं के निर्देश पर वाटिका परिसर आदि की स्वच्छता में विशेष योगदान करते हैं।

अन्य छात्र पुस्तकालय से विभिन्न ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें प्राप्त कर पढ़ते हुए देखे जा सकते हैं। ऐसा भी सुनने को प्राप्त हुआ है कि विद्यालय द्वारा भविष्य में छात्र आत्म निर्भर हो सके इस हेतु रोजगार सम्बन्धी उद्योग प्रणाली आरम्भ की जा रही है।

सायं देवार्चन :

रक्तिम रूप धारण कर जव मरीचिमाली अस्ताचल की ओर प्रस्थान कर रहे होते हैं। उस समय सभी छात्र सायं संध्या से निवृत्त हो गणवेश में विभिन्न स्तोत्रों द्वारा त्रिवटीनाथ की आराधना कर वातावरण को सुरम्य भक्ति पूर्ण तथा मनोहारी बना देते हैं।

सायं स्वाध्याय :

इस प्रकार देवार्चन के उपरांत भोजन करके पुन: छात्र रात्रि दस वजे तक स्वाध्याय में लीन हो जाते हैं। मध्य-मध्य में छात्रावास अधीक्षक द्वारा निरीक्षण जारी रहता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक सत्र में निर्धारित क्रमानुसार वार्षिकोत्सव, छात्र यज्ञोपवीत श्रावणी उपाकर्म आदि साँस्कृतिक उत्सवों का आयोजन होता रहता है। निष्कर्षत: यह विद्यालय छात्रों में भावी जीवन हेतु सौहार्दादि विभिन्न मानवीय गुणों का समायोजन कर उनकी उन्नति का एक मात्र पर्याय है। इति शम्!

शैक्षिकी नीति सन्दर्भे संस्कृतं क्व विराजताम्

—श्री महेश चन्द्र शर्मा
प्रधानाचार्य, श्री गुलाबराय इण्टर कालेज, बरेली।

र्तमान परिवेशे शिक्षा कीदृशी स्यादिति चिन्तापरा: राजनीतिज्ञा: शिक्षाशास्त्रिणश्च परस्परं विमृशन्त: शिक्षाया: नवां नीतिं प्रस्तावितवन्त:। राष्ट्रिय शिक्षानीति नामके परिपत्रे १९८६ तमे खीष्टाब्दे भाषा-शिक्षणस्य दिशां निश्चित्य तै: निम्नाङ्किता: प्रस्तरा: प्रकल्पिता: आसन् :—१. प्राथमिकं स्तरम् २. पूर्वमाध्यमिकं स्तरम्
३. माध्यमिकं स्तरम् ४. उत्तरमाध्यमिकं स्तरम्

अधुना प्राथमिके स्तरे मातृभाषा, हिन्दी अथवा अंग्रेजी माध्यमेन शालासु शिक्षा दीयते। वस्तुत: प्राथमिके स्तरे (१-५) राष्ट्र भाषया वा माध्यमेन शिक्षा दातव्या। पूर्वमाध्यमिके स्तरे (६-८ साम्प्रतम् निम्नाङ्कितम् सूत्रम् प्रचलितमस्ति :-
१. हिन्दी, अनिवार्य संस्कृतञ्च। २. अंग्रेजी। ३. संस्कृतम्, उर्दू, प्रांतीय भाषासु अन्यतमा।

अस्मिन् स्तरे वर्तमान-शिक्षा-नीत्यां संस्कृतस्य तृतीयम् वैकल्पिकञ्च स्थानमस्ति। विशेषवलन्तु दक्षिणभारतीयभाषाभ्य: उर्दू भाषायै च। इत्येव चिन्तास्पदम्। संस्कृतम् अस्मिन् सूत्रे द्वितीय स्थाने स्थापितं भवेत्। अंग्रेजी च तृतीय स्थाने स्थापिता स्यात्। संस्कृतायोगेनापि निम्नाङ्किते वाक्ये स्वीकृतम्—

"स्पष्टमस्ति यद् वर्तमानत्रिभाषासूत्रे संस्कृतस्य अनिवार्याध्यपनस्य व्यवस्था नास्ति।"

इत्थं वर्तमान शिक्षानीत्यां तु संस्कृतस्य नाम अपि समाप्तिं यास्यति। यत: तृतीये स्थाने यदा क्षेत्रीय भाषाया: अध्यापनं भविष्यति तदा संस्कृतभाषा नूनमेव उपेक्षिता भविष्यति। पूर्वमाध्यमिके स्तरे (९-१०) अधुना निम्नङ्कितरुपेण अध्यापनं प्रचलितमस्ति—
१- हिन्दी। २- एका प्रान्तीया भाषा/विदेशी भाषा/ शास्त्रीया भाषा। आसु एका द्वे भाषे वा गृहीतव्ये स्त:।

साम्प्रतम् उपरिलिखितम् सूत्रम् राष्ट्रिय शिक्षा नीत्याम् निम्नाङ्कितरुपेण परिवर्तितमस्ति—
१- हिन्दी। २- अंग्रेजी/संस्कृतम्/प्रान्तीय भाषा/उर्दू

एवं संस्कृतम् अंग्रेजी भाषाया: वैकल्पिक रुपेण अथवा अतिरिक्त भाषा रुपेण प्रस्ताविता भविष्यति तदा संस्कृतम् उपेक्षित मेव। अत: संस्कृतस्य अध्यापनं अनिवार्य भवेत् अत:- निम्नाङ्कितम् सूत्रम् वर्तमान त्रिभाषा सूत्रस्य स्थाने आवश्यकमस्ति—
१- हिन्दी २. संस्कृतम्/उर्दू ३. अंग्रेजी/प्रान्तीया भाषा/शास्त्रीया भाषा

इदमेव त्रिभाषासूत्रम् वस्तुत: लाभकारकम् अन्यथा भारतीया संस्कृति:, अनन्त ज्ञानराशि:, भारतीयतागौरवं, नैतिक शिक्षाया भारतीय दर्शनस्य च शान्ति दायिनी शक्ति: संस्कृत भाषा नितराम् उपेक्षिता भविष्यति। □

उपनिवेशवाद से जूझती आई है संस्कृत

—मोहन चन्द्र

नवभारत टाइम्स ६ अगस्त १९९० से साभार

अभी कुछ दिन पहले अमेरिकी प्राच्यविद्या विशेषज्ञ तथा शिकागो विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर सैलडन पोलाक जब केरल स्थित संस्कृत कालेज के आमंत्रण पर व्याख्यान देने भारत में आए थे तो उन्होंने भारत के बुद्धिजीवियों के सामने यह महत्वपूर्ण सवाल रखा कि आज अमेरिका संस्कृत विद्या के क्षेत्र में गहरी रुचि ले रहा है पर क्या कारण है कि जिस देश में संस्कृत का जन्म हुआ उसी देश में वह भाषा अस्तित्व बचाने के संकट से गुजर रही है ? अमेरिकी विद्वान को चिन्ता थी, यदि भारत में संस्कृत को मर जाने दिया गया तो यह विश्व की एक बहुत बड़ी सांस्कृतिक धरोहर और इतिहास की हत्या होगी। उनकी धारणा है कि भारत का अतीत अभी भी वर्तमान में जीवित है। आधुनिकीकरण के कार्यक्रम उसे नष्ट नहीं कर सकते है इसलिए भारत में अतीत को पढ़ा जाना बहुत जरूरी है ताकि ज्ञान विज्ञान की एक अमूल्य सम्पदा वर्तमान के खाते में हस्तान्तरित हो सके।

सैलडन पोलॉक से जब यह पूछा गया कि संस्कृत शिक्षा के ह्रास के लिए किसे जिम्मेदार माना जाए तो उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेशवादी नीति को इसके लिए दोषी ठहराया। वे कहते हैं "ब्रिटिश लोग जब भारत में आए तो उन्होंने यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि संस्कृत साहित्य द्वारा पिछले तीन हजार वर्षों से संवर्धित भारतीय ज्ञान विज्ञान एक घटिया किस्म का है और यहीं से संस्कृत शिक्षा का धीरे-२ ह्रास होने लगा। किन्तु आज वह विलुप्ति के कगार पर ही आ पहुंची है।"

संस्कृत शिक्षा के ह्रास का जो कारण अमेरिकी प्राच्यविद्या मनीषी ने दिया है वह ऐतिहासिक दृष्टि से भी सही है। "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" के भारत प्रवेश से पहले अकेले बंगाल में ही ८० हजार देशी पाठशालाएं चलती थीं। हर चार सौ की आबादी के पीछे एक पाठशाला मौजूद थी। ग्राम पंचायतों के द्वारा इन पाठशालाओं की आर्थिक व्यवस्था की जाती थी। किन्तु कम्पनी ने आते ही बंगाल की तमाम ग्राम पंचायतों को नष्ट कर दिया और उसके साथ ही पाठशालाएं भी स्वयमेव लुप्त होती चली गईं। ब्रिटिश उपनिवेशवादियों का भारत की परम्परागत शिक्षा पर किया गया यह पहला हमला था।

अंग्रेज प्रशासकों का सोचना था कि संस्कृत, की शिक्षा भारतवासियों में आत्म गौरव तथा राष्ट्रीय चेतना की भावना ही मजबूत करेगी। इसी राजनैतिक इरादे से मैकाले तथा गर्वनर जनरल विलियम वेन्टिक ने भारतीयों के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली लागू की जिसके

अन्तर्गत संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं को नहीं पढ़ाया जाता था और सारा बजट अंग्रेजी भाषा और उसके साहित्य पर खर्च किया जाता था। लागू होने के १८ वर्षों के बाद ही मैकाले की शिक्षा नीति के परिणाम भी सामने आने लगे। अंग्रेजीं पढ़े लिखे लोगों का एक ऐसा वर्ग बन गया जो केवल रक्त और रंग की दृष्टि से भारतीय था पर आचार विचार से अंग्रेज बन गया।

प्राचीन रोम के आक्रान्ता जब किसी देश पर विजय करते थे तो उस देश की भाषा और साहित्य को दबाकर वहाँ के कुलीन वर्ग में रोमन भाषा और साहित्य का प्रचार करना उनका पहला कार्य होता था। मैकाले ने उसी नीति को भारतवर्ष पर लागू किया था। इतिहासकार मैकाले की इस संस्कृत विरोधी शिक्षा नीति को ब्रिटिश साम्राज्य की सबसे बड़ी उपलब्धि मानते हैं।

अंग्रेजों की इस संस्कृत विरोधी नीति के विरुद्ध अनेक पश्चिमी संस्कृतविदों तथा सोवियत प्राच्यविद्या मनीषियों ने भारतीयों का साथ दिया जिनमें एच. एच. विल्सन, मैक्सम्युलर तथा रूसी विद्वान इवान मिनायेव का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सोवियत रूस में भारतीय विद्या के संस्थापक मिनायेव ने तीन बार भारत भ्रमण किया तथा भारतीय संस्कृत विद्वानों से सम्पर्क बनाए रखा।

उसी समय सन् १८८४ में मिनायेव ने पीटर्स बर्ग विश्वविद्यालय में 'रूस के विश्व-विद्यालयों में भारत का अध्ययन' विषय पर बोलते हुए भारतीय सभ्यता और संस्कृति के महत्वपूर्ण योगदान की प्रशंसा की।

उन्होंने माना है कि भारतीय इतिहास में गहरी रुचि के कारत ही सोवियत संस्कृति भारत के बहुत नजदीक है।

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध सबसे पहली मुहिम संस्कृत के विद्वानों ने ही छेड़ी। नैतिक दृष्टि से यह आन्दोलन इतना शक्तिशाली था कि अनेक विदेशी मूल के संस्कृत विद्वान भी इसे प्रत्यक्ष या परोक्ष से समर्थन दे रहे थे। उदाहरणार्थ मैकाले तंत्र की अंग्रेजी शिक्षा के विरुद्ध अपनी असहमति प्रकट करते हुये मैक्सम्युलर ने १६ दिसम्बर, १८९८ को 'ड्यूक ऑफ आरगयिल' को पत्र द्वारा समझाया था 'भारत का अंग्रेजीकरण नहीं किया जा सकता बल्कि शिक्षा प्रणाली के तहत भारतवासियों को उनके प्राचीन साहित्य के अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करते हुए उनका पुनरुत्थान किया जा सकता है। इससे उनमें गर्व तथा स्वाभिमान जागेगा। देशी भाषाओं की प्रोन्नति हेतु श्रेष्ठ भाषा 'संस्कृत' की शिक्षा अत्यावश्यक है क्योंकि इससे ही आधुनिक बोलियां जन्मी हैं और केवल इसी से उन्हें जीवन शक्ति तथा सौन्दर्य प्राप्त होता है।'

'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' का नौकर होने के कारण एच. एच. विल्सन कुछ कर सकने की स्थिति में नहीं थे किन्तु संस्कृत विद्वानों को धैर्य दिलाने के लिए उन्होंने एक श्लोक की रचना की थी जिसका आशय है कि संस्कृत दिव्य आशीर्वाद से सम्पन्न विलक्षण भाषा है। दूर्वा घास

के समान चाहें हजारों लोग अपने पैरों से रौंद डालें, सूर्य की अग्नितुल्य किरणें उसे जलाकर रख दें, जानवर उसे चर डालें या फिर कुदालों से उसे छील भी दिया जाए तो भी उसकी जड़ें नहीं मर सकती हैं :—

"निष्पीड्यापि परं पदाहतिशतैः शश्वद् बहुप्राणिनां,
सन्तप्तापि करैः सहस्रकिरणेनाग्नि - स्फुलिंगोपमैः।
छागाद्यैश्च विचर्वितापि सततं भ्रष्टाऽपि कुद्दालकैः,
दूर्वा न म्रियते कृशापि नितरां धातुर्दया दुर्बले ॥"

पर नई शिक्षा नीति के तहत पिछले दो तीन वर्षों से संस्कृत भाषा को त्रिभाषा फार्मूले से हटाने की जो नीति चल रही है उसने एक देशव्यापी संकट का रूप धारण कर लिया है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने स्कूलों को यह आदेश जारी किया है कि त्रिभाषा फार्मूले के तहत अब संस्कृत को नहीं पढ़ाया जा सकता। नई शिक्षा नीति द्वारा संस्कृत और प्राच्य-विद्याओं को विशेष प्रोत्साहित करने का संकल्प लिया गया है। संस्कृत हटाने की भाषाई नीति उस संकल्प पर ही प्रश्न चिन्ह लगा देती है।

★★★★

संस्कृत भाषा

सुना जाता है कि वेदों की ११३१ शाखायें थीं। जिनमें अब केवल लगभग १२ ही मिलती हैं। सामवेद की १००० शाखाओं में केवल ३ मिलती हैं यही दशा वेद के ब्राह्मण, आरण्यक, कल्पसूत्रादि की तथा वेदांग एवं अन्यान्य धर्म ग्रन्थों की है। इन सब वैदिक शाखाओं तथा अन्यान्य धर्म ग्रन्थों का इतना ह्रास कैसे हुआ। इस पर निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि वैदिक धर्म के विरोधियों तथा विदेशी अत्याचारियों के द्वारा ही हमारी यह सारी अमूल्य ग्रन्थ-सम्पत्ति नष्ट कर दी गयी।

कहा जाता है कि उज्जैन के राजा मतादित्य ने हजारों ब्राह्मणों की तमाम पुस्तकों को जलवा दिया था। बौद्धों के द्वारा सह्याद्रिखण्ड (पुस्तकालय) का नाश किया जाना प्रसिद्ध है। मुसलमानों ने अलैक्जेंड्रिया के पुस्तकालय को जला दिया था। महमूद और नादिरशाह ने भी संस्कृत के अगणित धर्म ग्रन्थों का नाश किया। कुछ मुसलमान बादशाहों ने तो संस्कृत की पुस्तकों को "हमाम" गरम करने के लिये जलाया था। इस प्रकार हमारे इस अमूल्य ज्ञान को ध्वंश कर दिया गया। यों पहले तो अत्याचारियों ने इसका नाश किया पर उसमें तो हम निरुपाय थे किन्तु बड़े खेद की बात है कि अब बचे खुचे का हम अपनी अवहेलना तथा मूर्खता से नाश कर रहे हैं।

'कल्याण" वर्ष ५५, अंक १०, पृष्ठ ८३१ से उद्घृत

संकलन कर्त्ता—**श्री रामकुमार खण्डेलवाल**

संस्कार आवश्यक क्यों ?

—डा० उषा मिश्रा, एम. ए., पी-एच. डी.
प्रधानाचार्य
रिक्खी सिंह गर्ल्स इण्टर कालेज, बरेली ।

मानवमात्र की संस्कृति संस्कारगत आचरण पर ही पल्लवित होती है । किसी भी धर्म वर्ण, जाति एवं सम्प्रदाय में संस्कार का ही महत्व है । काल-क्रम के अनेक परिवर्तनों के साथ वे आज भी जीवित हैं । यह धार्मिक विश्वासों और सामाजिक पर्यावरण पर आधारित हैं । इसके अन्तर्गत विधि-विधान कर्मकाण्ड, आचार-विचार और प्रथायें आदि सार्वभौम रूप से आ जाती है जो संसार के विविध देशों में पायी जाती हैं । संस्कार की काया सभ्यता और आत्मा संस्कृति है धर्म इसका प्राण और आचरण इसकी सांस है । प्रत्येक समाज मूल्यों, धारणाओं और मान्यताओं को जीव और सुरक्षित रखने के लिए उनके प्रति निष्ठा और विश्वास उत्पन्न करता है । विधि और संविधान को समझने के लिए तथा अनुशासन को आचरित करने के लिए एवं इन सबके प्रति सम्यक् श्रद्धा और आदर समर्पित करने के लिए सभी का मन संस्कृत होना चाहिए, संस्कार के द्वारा ही मन संस्कृत एवं शुद्ध हो पाता है ।

भाषा, सूक्तियों और लोकाचारों में इनका आवास है। माता-पिता, सम्बन्धी-मित्र शिक्षा, अध्यापक और गुरू आदि सभी बालक के मन को संस्कृत करते हैं । शिक्षा उपदेश और विचारों का संक्रमण प्रत्येक मन में होता है तथा शनैः-२ अभ्यास अचेतन रूप से पड़ कर जीवन के प्रत्येक मोड़ पर चेतावनी देता है । अप्रत्यक्ष रूप से संस्कार सामाजिक व्यवस्था की संरचना करते हैं, उनका पोषण और संहार करते हैं । ब्रह्मा-विष्णु-महेश की शक्तियों को सार्थक एवं उनका क्रियान्वयन करते हैं । जीवन के विकास का प्रत्येक चरण केवल शारीरिक क्रिया-मात्र नहीं है अपितु बौद्धिक मानसिक तथा आत्मिक अभिव्यक्ति भी है। यही विकास का सिद्धान्त भी है । इनके प्रति प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक रहना चाहिए ।

संस्कार शब्द अंग्रेजी के Ceremony और लैटिन के सिरोमोनिया शब्दों से मिलता है, किन्तु उनमें संस्कार शब्द का अर्थ व्यक्त करने की क्षमता नहीं है । Ceremony शब्द का प्रयोग संस्कृत कर्म अथवा सामान्य रूप से धार्मिक क्रियाओं के लिए अधिक उपयुक्त है । संस्कार शब्द का अधिक उपयुक्त पर्याय अंग्रेजी का 'सेक्रामेण्ट' शब्द है जिसका अर्थ धार्मिक विधि-विधान है ।

संस्कार शब्द सम् पूर्वक 'कृ' धातु से घञ् प्रत्यय से निष्पन्न एवं व्युत्पन्न है । मीमांसक यज्ञाङ्ग भूत पुरोडास आदि की विधिवत् शुद्धि से इसका आशय समझते हैं । द्वैतवेदान्ती जीव पर शरीरिक क्रियाओं के मिथ्या आरोप को संस्कार मानते हैं । नैयायिक भावों को व्यक्त करने की आत्मव्यञ्जक शक्ति को संस्कार कहते हैं जिसका परिगणन वैशेषिक दर्शन में चौबीस गुणों के अन्तर्गत किया गया है संस्कृत-साहित्य में इसका प्रयोग शिक्षा संस्कृति, प्रशिक्षण, सौजन्य, पूर्णता, व्याकरण-सम्बन्धी शुद्धि, संस्करण, परिष्करण, शोभा, प्रभाव, स्वरूप स्वभाव क्रिया धार्मिक विधि विधान, अभिषेक, विचार, भावना धारणा आदि अर्थों में हुआ है ।

वस्तुतः संस्कार का अभिप्राय धार्मिक क्रियाओं—यथा व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक परिष्कार के लिए किये जाने वाले अनुष्ठान से है जिनसे वह समाज का पूर्ण विकसित सदस्य हो सके। संस्कारों को अनिवार्य बनाने में हिन्दू-समाजशास्त्रियों का उद्देश्य था कि संस्कृति व चरित्र की दृष्टि से समाज उच्चादर्श से अनुप्राणित हो सके।

सामाजिक विशेषाधिकार तथा अधिकार भी संस्कारों के साथ सम्बद्ध थे। उपनयन संस्कार एक प्रकार से समाज और उसके धार्मिक साहित्य में प्रविष्ट होने का प्रवेश पत्र था। विद्यार्थी-जीवन की समाप्ति तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के लिए समावर्तन संस्कार का अनुष्ठान करना अपेक्षित था। व्यक्तित्व के निर्माण और विकास के लिए संस्कार मार्गदर्शक का कार्य करते थे जो आयु के बढ़ने के साथ व्यक्ति के जीवन को एक निर्दिष्ट दिशा की ओर ले जाते थे। फलतः हिन्दू के लिए अनुशासित जीवन व्यतीत करना आवश्यक था तथा उसकी शक्तियां सुनियोजित व सोद्देश्य धारा में प्रवाहमान रहती थीं। दूषित शारीरिक व मानसिक प्रभावों से बचाव के लिए संस्कार अनिवार्य था ताकि शिशु पर पूर्व से ही सत् प्रभाव पड़े। शत्रुनाशक एवं बुद्धिमान होने के लिए प्रज्ञाजनन संस्कार अनिवार्य था। चूड़ाकरण संस्कार ग्रन्थों के अध्ययन एवं विद्यालय के निमन्त्रण की तैयारी थी। विवाह की व्यवस्था मानवसभ्यता का विकसित स्वरूप था। यह गृहस्थाश्रम एवं दाम्पत्य जीवन ही विश्वमंच पर धर्म और कर्म की स्थली थी। पूर्ववर्ती संस्कारों के मानसिक प्रभाव से व्यक्ति के लिए मृत्यु का सामना करना सरल हो जाता था और इसके जीवन के दूसरे पार्श्व की यात्रा करने में उसे सान्त्वना और सहायता मिलती थी।

आत्मा की निवास स्थली काया को संस्कारित करना अनिवार्य समझा जाता था। मनु के अनुसार स्वाध्याय, व्रत, होम-देव और ऋषियों के तर्पण यज्ञ सन्तानोत्पत्ति इज्या व पञ्चमहायज्ञों के अनुष्ठान से यह शरीर 'ब्राह्म' हो जाता है। संस्कार एक प्रकार से आध्यात्मिक शिक्षा की क्रमिक सीढ़ियों का कार्य करते थे। उनके द्वारा संस्कृत व्यक्ति यह अनुभव करता था कि सम्पूर्ण जीवन वस्तुतः संस्कारमय है और सम्पूर्ण दैहिक क्रियाएं आध्यात्मिक ध्येय से अनुप्राणित है। हिन्दू संस्कारों की भाषा में सोचते और व्यवहार करते थे। आत्मा के सुन्दर पवित्र मन्दिर को शुद्ध रखने का परम प्रयोजन था।

विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ।। यजु० ४०-११ ।।

संस्कार हीन मानव साक्षात् पशु, राक्षस, पिशाच आदि की प्रतिमूर्ति के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। संयम-नियम और अनुशासन आदि मानवता की मुकुट मणियाँ हैं। संस्कार के अभाव में एवं संस्कार के अनभ्यास से ही वर्तमान भारत की जो अधोगति है जो विषमता है वह किसी से छिपी नहीं है। अतः अधार्मिक अधोगामी कुण्ठाओं को त्याग कर प्रत्येक मानव इसे खुले हृदय से स्वीकार करे। सत् शास्त्रों का अध्ययन कर मानव बने रहने की प्रतिज्ञा को व्यवहार और आचरण में लाना चाहिए तभी कल्याण सम्भव है।

अहं भूमिमददामार्याय

–डा० सावित्री देवी शर्मा
एम० ए०, वेदाचार्य

राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित महामना तपस्वी चाणक्य ने लिखा है "राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः पापे पापा समे समाः। राजानमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः"। यह ध्रुव सत्य है कि प्रजा राजा के धर्मिष्ठ होने पर तथा पाप पुण्य में बराबर होने पर उसी अनुपात में पाप पुण्यों का आचरण करती है। श्री मद्भगवद्गीता में भी इसी आशय का सर्थमन करते हुये योगिराज कृष्ण जी स्पष्ट घोषणा करते हैं "यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्त देवेतरोजनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते" इस लोक में दो प्रकार की गतियाँ स्पष्ट दीखती हैं लोक गति तथा श्रेष्ठ गति। लोक गति साधारण जनता की गतिविधि है। श्रेष्ठ धार्मिक जनों के आचरण "श्रेष्ठगति" कहलाती है। श्रेष्ठ की गतिविधियों से सामान्य जनता अवश्य प्रभावित होती है जैसा आचरण उत्तरदायी साधु पुरूष करता है वही अनुयायी इतर सामान्यजन भी किया करते हैं। इतना ही नहीं उसी प्रमाणानुपात में श्रेष्ठ जनों के अनुकरण लौकिक जनों में पाये जाते हैं। इसी श्रेष्ठानुकृति रहस्य को समझते हुये युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द भी लिखते हैं "विद्वान सब नहीं हो सकते किन्तु धर्मातमा सब हो सकते हैं"। विद्वान बनना कठोर तप एवं कुशाग्रमेधा शक्ति पर आधारित है किन्तु "महाजनों येन गतः स पन्था" के अनुसार धर्मातमा बनने के लिये सदाचारी धार्मिक जनों का सत्सङ्ग अत्यावश्यक है।

दिव्य शक्ति सम्पन्न सत्पुरुषों की उपासना ही सेवकों को धर्मातमा बना देती है। अतः स्पष्ट है किसी परिवार समाज संस्था या राष्ट्र के सञ्चालन के लिये श्रेष्ठतम व्यक्तित्व चाहिये। राज धर्म के विशेषज्ञ आइंस्टीन महोदय ने प्रजा पालक को श्रेष्ठतम सदाचारी व्यक्ति के रूप में ही पहिचाना। सृष्टि के आदिकाल में यह मधुर श्रुति गुञ्जन कितना आह्लादकारी रहा होगा "अहं भूमिमददामार्याय" परमपिता परमात्मा पुत्रवत् परिपालनीय प्रजा के संरक्षण का भार आर्य के सबल स्कन्धों पर ही रखकर सन्तुष्ट हैं। भूपति आर्य ही हो सकता है। यह वसुन्धरा आर्य वीरों द्वारा ही पालनीया रक्षणीया तथा भोग्या है। असुरों द्वारा नहीं "वीर भोग्या वसुन्धरा" इसी परिप्रेक्ष्य में आइये "राष्ट्र का नायक कौन है ? और कैसे ? इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें। वर्तमान चुनाव प्रणाली में शासकीय पद के प्रत्याशी के लिये मुख्य तीन शर्तें आवश्यक समझी गयी हैं। १- भारत का नागरिक हो। २- २५ वर्ष से कम न हो। ३- दिवालिया या पागल विक्षिप्त न हो। इन्हीं को आज हम योग्य कहते हैं। इन तीनों शर्तों में कहीं भी प्रत्याशी के चारित्रिक बौद्धिक क्षमताओं पर विचार नहीं किया गया। प्रारम्भिक कक्षा के छात्रों के अनुशासन और अध्यापन के लिये भी कुछ शैक्षिक उपाधियाँ प्रशिक्षणादि के प्रतिबन्ध लगाये गये हैं किन्तु कितने खेद का विषय है राष्ट्र का सञ्चालन करने वाले व्यक्ति में चरित्र और विद्या जैसे अनिवार्य गुणों को उपेक्षित किया गया है। वेद के शब्दों में सफल लोकनायक कौन हो सकता है ?

इन्द्रो जयति न पराजयाता अधिराजो राजसु राजयते । चर्कृत्य ईड्यो वन्धश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह (अथर्व १ कां ६/अनु० १० व ९८ मं० १) अर्थात् हे मनुष्यों ! इस मनुष्य समुदाय में परमैश्वर्यशाली शत्रुविजेता शत्रुओं से भी पराजित न होने वाले सर्वोपरि विराजमान सभापति होने योग्य, प्रशंसनीय गुण कर्म स्वराज युक्त, सत्यकरणीय समीप जाने और शरण लेने योग्य सबके माननीय व्यक्ति को ही आप लोग सभापति राजा बनावें ।

राजधर्म विषय की व्याख्या करते हुये यजुर्वेद में भी कहा है :—इमं देवाऽअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । यजु० अ० ९ मं ४० हे विद्वानों, राजप्रजाजनों ! तुम चक्रवर्त्तिराज्य के संस्थापक सर्वश्रेष्ठ विद्वन्मण्डलयुक्त राज्य के परिपालक परमैश्वर्ययुक्त पक्षपात रहित पूर्ण विद्याविनय युक्त राजा को सभापति बनाकर समस्त भूगोल को शत्रु रहित करो । मनीषी विद्वान चाणक्य कितने सरल सुस्पष्ट शब्दों में शासक के गुणों की व्याख्या करते हैं "उपधा शुद्ध श्रुतिवन्तं मन्त्रिगणं कुर्वीत ।" अर्थात् पूर्ण सदाचारी वेदज्ञ विद्वानों को ही मन्त्रिपरिषद पर प्रतिष्ठित करें । उपर्युक्त वेद शास्त्रों प्रमाणों से स्पष्ट है कि पूर्ण विद्या विनय सम्पन्न साधुजन ही राष्ट्र के कर्णधार होने योग्य हैं । किन्तु चुनाव आयोग की उपरिलिखित सामान्य शर्तों के अन्तर्गत निरक्षर भट्टाचार्यो कुत्सित दुराचारियों का प्रवेश अनायास ही सुलभ हो जाता है । अतः श्रेष्ठतम व्यक्तित्व को लोकनायक राजपद पर प्रतिष्ठित करने के लिये वैदिक चयन प्रणाली ही विश्व के राजनीतिज्ञों के समक्ष आदर्श है । ★ ★ ★

वैदिक वाङ्मयपरिचय

१.	चारवेद	=	ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ।
२.	चारउपवेद	=	आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थवेद ।
३.	चारब्राह्मण	=	ऐतरेय, शतपथ, साम, गोपथ ।
४.	छः वेदाङ्ग	=	शिक्षा, कल्प, ज्योतिष, व्याकरण, निरुक्त, छंद ।
५.	छः दर्शन	=	न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा ।
६.	ग्यारह उपनिषद	=	ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, श्वेताश्वतर ।
७.	स्मृति	=	मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति आदि ।

शारदा वन्दना

हे शारदे ! गतवती क्व नु देहि शक्ति,
दीनाह्वयामि भववारिनिधौ निमग्ना ।
हे हंसवाहनि ! विलोकय दुर्दशां मे
नित्यं स्मरामि चरणौ शरणं प्रपद्ये ।।

—इन्दिरा

विद्ययामृतमश्नुते

—डा० रमाकान्त शर्मा "मधुव्रत"
एम. ए., (संस्कृत हिन्दी) पी-एच. डी.
साहित्याचार्य साहित्यरत्न

संसार में मानव को महत्व प्राप्त होने का कारण उसकी सुव्यवस्थित जीवन चर्या है। वर्णआश्रम धर्म व्यवस्था इसकी आधारशिला है। ऋषियों ने जीवन के मर्म को हृदयङ्गम करके ही इस व्यवस्था को विकसित किया था। प्रत्येक व्यक्ति को चारों आश्रमों में प्रवेश तथा अपने-अपने निर्दिष्ट कर्तव्यों का अनुपालन करने का निर्देश दिया। इस जीवन्त व्यवस्था ने मानव मात्र को प्राणान्वित किया है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, और सन्यास आश्रम व्यवस्था रूपी चार पदों वाली सीढ़ी जीव को क्रमशः ब्रह्म की ओर ले जाती है।

ब्रह्मचर्याश्रम से प्रत्येक शिशु के जीवन का श्री गणेश होता है उन्हें गुरुकुलों में रहना होता है जहां का पवित्र वायुमण्डल पितृ तुल्य वीतराग आचार्य मनीषी, उपाध्याय वर्ग से शारीरिक मानसिक आत्मिक उन्नति का सुअवसर उपलब्ध होता है। यही काल विद्यार्जन का काल है इसमें विद्यार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सांगोपांग वेदादि शास्त्रों का अध्ययन तथा विभिन्न ज्ञान विज्ञानों का उपार्जन किया करता है।

सन्नियम्येन्द्रियग्रामं तपो वृद्ध्यर्थमात्मनः।
वर्जयेन् मधुमांसञ्च गन्ध माल्यं रसान स्त्रियः ।। मनु

एक ही कार्य से मनुष्य प्रधानतः आधिभौतिक आधिदैविक या आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है विद्यार्थी जीवन में वह कार्य ब्रह्मचर्य व्रत है यह एक ऐसी तपस्या है जो तीनों प्रकार की शक्ति संयम का एक मात्र आधार है।

सत्येन लभ्यस्तपसाह्येष आत्मा।
सम्यग् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् ।।

सत्य, तपस्या, ज्ञान और ब्रह्मचर्य के द्वारा आत्मा की उपलब्धि होती है। ब्रह्मचर्य ज्ञान रूप प्रदीप के लिए तैल रूप है और संसार समुद्र में पथभ्रष्ट प्राणियों के लिए आकाश दीप है।

इसी ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्यार्थी आध्यात्मिक त्रिविध उन्नति करता हुआ परमात्मा का साक्षात्कार कर लेता है। छान्दोग्योपनिषद का कथन है—

अथ यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेवतद् ब्रह्मचर्येण ह्येव यो ज्ञाता तं विन्दतेऽथ
यदिष्ट मित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेवतद् ब्रह्मचर्येण ह्येवेष्टात्मान - मनुविन्दते।

ब्रह्मचर्य ही यज्ञ और इष्ट कृत्य है जिससे मनुष्य आत्मा को प्राप्त होता है। जिस शक्ति के द्वारा महर्षिगण प्राचीनकाल में ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करके दिग्दिगन्त में उसकी छटा को फहराते थे, जिस शक्ति के द्वारा उसके समाधियुक्त अन्तःकरण में वेद की ज्योति प्रतिफ़लित हुआ करती थी, वह शक्ति ऊर्ध्वरेता महर्षियों में ब्रह्म की ही शक्ति है।

छान्दोग्योपनिषद् में इन्द्र विरोचन सम्वाद में इस सिद्धान्त को स्पष्ट कर दिया था कि केवल ब्रह्मचर्य के द्वारा ब्रह्म ज्ञान की उपलब्धियाँ हो सकती हैं।

योग का सिद्धान्त है कि मन वायु और वीर्य तीनों परस्पर सम्बद्ध हों इनमें से एक भी वशीभूत हो तो दो और भी वशीभूत हो जाते हैं। मन के वशीभूत होने पर अन्तःकरण में ज्ञान का स्फुरण होता है। ब्रह्मचर्य पालन का यह आध्यात्मिक लाभ है। जो विद्यार्थी जीवन में ही प्राप्त होता है।

ब्रह्मचर्य के पालन से आधि दैविक उन्नति भी होती है योग दर्शन में लिखा है "ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्य लाभः" ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा से परमशक्ति प्राप्त होती है। ब्रह्मलोक प्राप्त होता है यथा—

तद्य ऐवेतं ब्रह्मलोकं ब्रह्मचर्येणाऽनुविन्दति तेषामेवैष
ब्रह्मलोकस्तेषां सर्वेषु लोकेषु कामचारी भवति।

ब्रह्मचर्य से आधिभौतिक उन्नति भी होती है। मानसिक आध्यात्मिक शारीरिक उन्नति स्वास्थ्य पर ही निर्भर है। चिकित्सा शास्त्र का यही सिद्धान्त है। दक्षसंहिता में कहा गया है—विद्यार्थी को शरीर मन बुद्धि तीनों को संयत कर कर्म करना चाहिए।

हमारे देश के गौरव रूप एक से एक उच्चकोटि के आदर्श विद्यार्थी हुए। ईश्वर चन्द्र विद्या सागर, स्वामी रामतीर्थ आदि जिनका जीवन चरित्र पढ़ने से ज्ञात होता है उनका जीवन कितना उत्कृष्ट रहा। निर्बलता में भी अनेक आपत्तियों को सहते हुए इन महान पुरुषों ने कठिनाइयों को सहा, शिक्षा प्राप्ति की। उनकी लगन प्रशंसनीय अनुकरणीय है। अपने चरित्र को ऊंचा उठाने के लिए_जीवन को सफल बनाने के लिए अच्छे विद्यार्थी को सतत् प्रत्यनशील रहना चाहिए आदर्श गुरुओं को अपनाने का अभ्यास करना चाहिए।

आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है। उस पर देश धर्म संस्कृति की उन्नति निर्भर है। वह अपने ज्ञान और विकसित मस्तिष्क द्वारा अपनी जाति धर्म और देश को उन्नति के शिखर पर पुनः पहुंचा सकता है। विद्यार्थी जीवन सम्पूर्ण जीवन की नींव है। नींव के सुदृढ़ होने से भवन टिकाऊ होता है। यह जीवन संयम साधना सुसंस्कारों से सम्पन्न बनता है। योगी की भांति उसमें अध्यवसाय आत्म संयम आदि गुण स्वतः आ जाते है। यह लाभ उसे गुरुकुलों में प्राप्त होता है।

ऐसे ही गुरुकुल के समान आदर्श संस्कृत विद्यालय की "श्री टीबरीनाथ साङ्गवेद संस्कृत विद्यालय" के नाम से, नगर के सन्त समान चित्त रखने वाले श्री रामकुमार खण्डेलवाल जी ने स्थापना कर के महानगर का बड़ा उपकार किया है। उनके सतत् प्रयासों से विद्यालय दिनों दिन उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर है। उन्होंने संस्कृत संस्कृति भारतीयता के पुनर्जागरण का जो बीड़ा उठाया है वह सर्वथा स्तुत्य है।

श्री टीबरीनाथ साङ्गवेद संस्कृत महाविद्यालय बरेली, के छात्र, विद्यार्थी जीवन के नियमों का पालन करते हुए अपनी संस्कृति, संस्कृत सभ्यता का अनुवर्तन करते हुए अपने राष्ट्र की यशः सुरभि को दिग्दिगन्त में प्रसरित करें, यही मेरी शुभकामना है।

भारत भूषण महामना पं० मदन मोहन मालवीय का

दिव्य आदेश

।। संघे शक्तिः कलौ युगे ।।

हिताय सर्व लोकानां निग्रहाय च दुष्कृताम् । धर्म संस्थापनार्थाय प्रणम्य परमेश्वरम् ।।१।।
ग्रामे ग्रामे सभा कार्य्या ग्रामे ग्रामे कथा शुभा । पाठशाला मल्लशाला प्रति पर्व महोत्सवः ।।२।।
अनाथा विधवा रक्ष्या मन्दिराणि तथा च गौः । धर्म्यसंघटनं कृत्वा देयं दानं च तद्धितम् ।।३।।
स्त्रीणां समादरः कार्यः दुःखितेषु दया तथा । अहिंसका न हन्तव्या आततायी वधार्हणः ।।४।।
अभयं सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्य्यं धृतिः क्षमा । सेव्यं सदाऽमृतमिव स्त्रीभिश्च पुरुषैस्तथा ।।५।।
कर्मणां फलमस्तीति विस्मर्तव्यं न जातुचित् । भवेत्पुनः पुनर्जन्म मोक्षस्तदनुसारतः ।।६।।
स्मर्तव्यः सततं विष्णुः सर्व भूतेष्ववस्थितः । एक एवाऽद्वितीयो यः शोकपाप हरः शिवः ।।७।।
पवित्राणां पवित्रं यो मंगलानाञ्च मङ्गलम् । दैवतं देवतानां च लोकानां योऽव्ययः पिता ।।८।।
उत्तमः सर्वधर्माणां हिन्दू धर्मोऽयमुच्यते । रक्ष्यः प्रचारणीयश्च सर्व भूत हिते रतः ।।९।।

कलियुग में एकता में शक्ति :

परमेश्वर को प्रणाम कर सब प्राणियों के उपकार के लिये बुराई करने वालों को दबाने व दण्ड देने के लिए तथा धर्म स्थापना के लिए धर्म के अनुसार संघटन व मिलाप कर गांव में सभा करनी चाहिए, गांव-गांव में कथा बिठानी चाहिये । गांव-गांव में विद्यालय व अखाड़ा खोलना चाहिए, और पर्व-२ पर मिल-कर महोत्सव मनाना चाहिए।

सब भाइयों को मिलकर अनाथों विधवाओं की, मंदिरों की व लोकमाता गौ की रक्षा करनी चाहिए और इन सब कामों के लिए दान देना चाहिए स्त्रियों का सम्मान व दुःखियों पर दया करनी चाहिए ।

उन जीवों को नहीं मारना चाहिए जो किसी पर चोट नहीं करते, मारना उनको चाहिए जो आततायी हों अर्थात जो स्त्रियों पर, किसी दूसरे के धन पर या प्राण पर आक्रमण करते हैं, और जो किसी के घर में आग लगाते हों । ऐसे लोगों को मारे-बिना यदि अपना या दूसरों का प्राण या धन बच सके तो उनको न मारना धर्म है । स्त्रियों और पुरुषों का भी निडरपन, सच्चाई, चोरी न करना, ब्रह्म-चर्य धीरज और क्षमा को अमृत के समान सदा सेवन करना चाहिए ।

इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए कि भले कर्मो का फल भला व बुरे कर्मो का फल बुरा होता है । और कर्मो के अनुसार ही प्राणी को बार-२ जन्म लेना पड़ता है मोक्ष मिलता है ।

घट-घट में बसने वाले विष्णु :

सर्वव्यापी ईश्वर का स्मरण सदा करना चाहिये । जो एक अद्वितीय है, जो दुःख व पाप के हरण करने वाले शिव स्वरुप हैं, जो सभी पवित्र वस्तुओं से भी अधिक पवित्र, जो सब मंगल कर्मो के मंगल स्वरुप हैं । जो सब देव-ताओं के देवता हैं, और समस्त संसार के एक अविनाशी पिता हैं, सब धर्मो से उत्तम इसी धर्म को हिन्दू धर्म कहते हैं । सब प्राणियों का हित चाहते हुए धर्म की रक्षा और प्रचार करना हमारा धर्म है, ।। इति शिवम् ।।

आधुनिक संस्कृत युग के साहित्यकार–

डा० गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री–एक परिचय

–**जयनारायण शुक्ल,** सहायक-निरीक्षक
संस्कृत पाठशालाएं, बरेली क्षेत्र, बरेली।

अपनी प्रखर बौद्धिक क्षमता, जन्मजात प्रतिभा, वैदुष्य एवं काव्य कौशल से आधुनिक संस्कृत साहित्य, में अपना सम्मानित स्थान निर्मित करने वाले मनीषी एवं सहृदय विद्वान् डा० बलभद्र प्रसाद गोस्वामी एक ऐसे रससिद्ध कवि नाटककार एवं संस्कृत की विभिन्न धाराओं के सिद्धहस्त रचनाकार है, जिनकी रचनाओं की संस्कृत समाज ने भूरि-२ प्रशंसा की है।

हरदोई जनपद के सकाहा नामक स्थान में जन्में डा० गोस्वामी ने शिक्षा क्षेत्र में कुछ वर्ष सेवा के पश्चात, ग्राम्य विकास विभाग में राजपत्रित अधिकारी के रूप में अनेक पदों पर कार्य किया है। वे १९८६ में सेवानिवृत्त हुए हैं आजकल बरेली नगर में ही निवास करते हैं।

उनकी रचनाओं के लिए हरियाणा सरकार द्वारा राजभवन में उन्हें अखिल भारतीय स्तर पर गीता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। "नेहरु यशः सौरभम्" महाकाव्य पर उन्हें वर्ष १९७७ में कालिदास पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। उ०प्र० संस्कृत अकादमी भी उन्हें पुरस्कृत कर चुकी है। उनकी रचनओं के महत्व को मान्यता देते हुए केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने सभी रचनाओं पर प्रकाशन अनुदान भी प्रदान किया है।

डा० गोस्वामी की रचनायें विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षाओं में निर्धारित हैं। उनकी स्फुट काव्य रचना, लघुकथा आलेख आदि आकाशवाणी से प्रसारित होते हैं। वे हिन्दीभाषा के कवि एवं उत्कृष्ट व्यङ्ग्य लेखक भी हैं। वर्ष १९८६ में ही उन्होने लिङ्ग महापुराण पर शोध कार्य करके प्रशंसा के साथ पी-एच. डी. प्राप्त की है।

डा० गोस्वामी उन मनीषियों में हैं जिन्होंने शिक्षा जगत से अलग, कवि कर्म के लिए अनुपयुक्त प्रशासनिक और ग्राम्य विकास जैसे दुरुह क्षेत्र में व्यस्त रहते हुए भी सर्वथा प्रशंसित एवं पुरस्कृत संस्कृत काव्य रचनाओं से देववाणी को समृद्ध किया है। वे अनेक संस्थाओं में योगदान किए हुए हैं।

डा० गोस्वामी अनेक बार विभिन्न संस्थाओ द्वारा अभिनन्दित हो चुके हैं। प्रो० लक्ष्मी चन्द्र कौशिक एवं डा० रमेश चन्द्र शुक्ल जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों ने उनकी रचनाओं पर भूमिका लिखी है। पुस्तक समीक्षा स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। अनेक शोध ग्रन्थों में उनकी रचनाओं को संदर्भित किया जा रहा है। फिर भी वे अपने प्रचार प्रसार और विज्ञापन बाजी से दूर रहकर माँ शारदा के मौन साधक ही रहे हैं, जब कि आधुनिक शैली में विज्ञापनों की सीढ़ियों पर चढ़कर अनेकों लोग अपना विराट प्रदर्शन करते देखे जा रहे है।

१- शिक्षा—साहित्याचार्य, एम. ए., पी-एच. डी., साहित्यरत्न, साहित्यालङ्कार।

२- रचनायें—चक्रव्यूहम् (काव्य), नेहरु यशः सौरभम् (महाकाव्य), सेतुबन्धम् (नाटक) कर्णाभिजात्यम् (नाटक), दूताञ्जनेयम् (काव्य), ज्योतिष्मती (स्फुट काव्य), एकांकी संग्रह (अन्तिम तीन अप्रकाशित)

देवद्विज-गुरु प्राज्ञ पूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ।।
देवता, द्विज, गुरु एवं विद्वानों का पूजन, पवित्रता, सरलता,
ब्रह्मचर्य पालन और अहिंसा को शारीरिक तप कहते हैं ।

तद् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ।

भली प्रकार प्रणाम सेवा, और निष्कपट भाव से किये हुये प्रश्नों द्वारा ज्ञानियों से ज्ञान प्राप्त करो । तभी तत्व दर्शी ज्ञानी जन तुम्हें उस ज्ञान का उपदेश देंगे ।
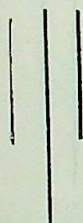
कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि
योगिनः कर्म कुर्वन्ति संगं त्यक्त्वात्मशुद्धये ।
निष्काम कर्म योगी पुरुष आसक्ति को त्यागकर अन्तःकरण की शुद्धि के लिये शरीर, मन, वाणी और इन्द्रियों से कर्म करते हैं ।

यस्तु इन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ।

जो मनुष्य मन से इन्द्रियों को वश में करके अनासक्त
होकर कर्मेन्द्रियों से कर्म करता है वह श्रेष्ठ है ।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ।।

कृष्ण कहते हैं जो सबमें मुझको देखता है और मुझको सब प्राणियों में देखता है उसके लिये मैं अदृश्य नहीं हूं वह मेरे लिये अदृश्य नहीं है ।
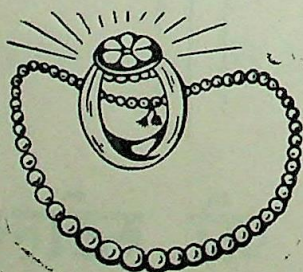
त्यक्त्वा कर्म फलासंगं नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति सः ।।

जो पुरुष सांसारिक आश्रय से रहित सदा परमात्मा में तृप्त है । वह कर्म फल को आसक्ति को त्याग कर अच्छी प्रकार कर्म करता हुआ भी कुछ भी नहीं करता है ।

बरेली नगर के गौरव एवं राष्ट्र की अनुपम विभूति
राधेश्याम रामायण के रचयिता एवं तर्ज राधेश्याम के प्रणेता

स्वनाम धन्य पं० राधेश्याम कथावाचक

को

गोस्वामी तुलसी दास जी की वाणी में

हमारी भावाञ्जलि

कलिके कविन्ह करउँ परनामा ।
जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ।।
जे प्राकृत कवि परम सयाने ।
भाषा जिन्ह हरि चरित बखाने ।।
भए जे अहहिं जे होइहहिं आगे ।
प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागे ।।
जे गावहिं यह चरित सँवारे ।
ते एहि काज चतुर रखवारें ।।

(स्व० ला० विशम्भरनाथ खण्डेलवाल)

(ला० राजेन्द्र कुमार खण्डेलवाल)

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम् ।।

विद्या नम्रता देती है, नम्र पुरुष सत्पात्र बनता है । सत्पात्र को धनागम होता है । धन से धर्म करने वाले को सुख मिलता है ।

टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय बरेली की निरन्तर प्रगति के लिए शुभकामनाओं के साथ

कैलाश नारायण दलाल

दोषमपि गुणवति जने दृष्ट्वा गुण रागिणो न खिद्यन्ते ।
प्रीत्यैव शशिनि पतितं पश्यति लोकः कलङ्कमपि ।।

गुणग्राही व्यक्ति गुणवान में दोष देखने पर भी खिन्न नहीं होते जैसे कलङ्क चन्द्रमा में लगा हुआ है फिर भी लोग चन्द्रमा को प्रेम से ही देखते हैं ।

यद्यपि बहुनाधीषे पठ पुत्र ! तथापि व्याकरणम् ।
स्वजनः श्वजनो मां भूत् सकलः शकलः सकृत् शकृत् ।।

पुत्र ! यद्यपि बहुत नहीं पढ़ रहे हो फिर भी संस्कृत व्याकरण अवश्य पढ़ लो, जिससे शुद्ध-ज्ञान और उच्चारण सही हो जाने से बोलते समय स्वजन (अपने लोग) श्वजन (कुत्ते) न हो जाएं । सकल (सम्पूर्ण) शकल (खण्ड) न होवे और सकृत् (एक बार) शकृत् (बिष्ठा) न हो जाए ।

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद् दानं सात्विकं विदुः ॥

जो दान देश, काल और पात्र की आवश्यकता को देखते हुये अनुपकारी व्यक्ति के लिये दिया जाये उसे ही सात्विक दान समझना चाहिये ।

"धर्मः स नो यत्र न सत्य मस्ति"
"वह धर्म क्या जिसमें सत्य का समावेश न हो"

श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय, नैनीताल रोड, बरेली

मासिक दानदाताओं की सूची

रु०

१- श्री टीबरी मंदिर कमेटी ३,४१६.००
२- श्री कैम्फर फैक्ट्री ६२५.००
३- श्री नवीन बाबू खण्डेलवाल ५००.००
४- श्री शिव कुमार अग्रवाल एक बोरी आटा २३०.००
५- श्री एलन फ्लोर मिल एक बोरी आटा २३०.००
६- श्री अनिल कुमार माहेश्वरी (अमर उजाला) २००,००
७- श्री अनिल कुमार गोयल (कोठी बियावानी) २००.००
८- श्री विजय कुमार गोयल (दी धामपुर शुगर मिल्स लि० धामपुर) २००.००
९- श्री प्रताप चन्द्र सेठ २००.००
१०- श्री धर्मदत्त वैद्य, श्री भूपेन्द्र नाथ शर्मा २००.००
११- श्री काशी नाथ शर्मा २००.००
१२- श्री त्रिलोक चन्द्र सेठ १५०.००
१३- श्री राम कुमार खण्डेलवाल १५०.००
१४- श्री सत्य प्रकाश (हलवाई) १५०.००
१५- श्री आनन्द ओबराय होटल १२५.००
१६- श्री कुमार मोटर्स १२५.००
१७- डा० ओ० पी० जायसवाल १२५.००
१८- श्री राम कुमार अग्रवाल (साहूकारे वाले) १२५.००
१९- श्री गंगा सहाय मोदी १००.००
२०- श्री सतेन्द्र प्रकाश गोयल १००.००
२१- श्री शान्ति प्रसाद अग्रवाल १००.००
२२- श्री ला० देवकी नन्दन (दिल्ली अलंकार भंडार) १००.००
२३- श्री गुलाबानी जी १००.००
२४- श्री गट्टूमल ज्योति प्रसाद १००.००
२५- श्री डा० आई० एस० तोमर १००.००

रु०

२६- श्री किशन लाला विजय कुमार १००.००
२७- श्री कृष्ण औतार अग्रवाल १००.००
२८- श्री पुरुषोत्तम सरन जी (बर्तन वाले) १००.००
२९- श्री रामनरायन खण्डेलवाल १००.००
३०- श्री राम साड़ी वाले १००.००
३१- श्री राजेन्द्र लाल माहेश्वरी १००.००
३२- श्री नन्द किशोर हरि ओम सर्राफ १००.००
३३- श्री योगेन्द्र कुमार गुप्ता १००.००
३४- श्री हीरा लाल मोती लाल ७५.००
३५- श्री अशोक कुमार खण्डेलवाल ६०.००
३६- श्री राम बल्लभ जी ६०.००
३७- श्री श्याम कुमार अग्रवाल ५१.००
३८- श्री सुभाष चन्द्र खण्डेलवाल ५१.००
३९- श्री चुन्नी लाल मनोज कुमार ५१.००
४०- श्री बृज मुरारी पाठक ५१.००
४१- श्री अरविन्द कुमार बास ५०.००
४२- श्री बाल चन्द गुलाठी ५०.००
४३- श्री भगवान जालान ५०.००
४४- श्री भगवत सरन जी ५०.००
४५- श्री अग्रवाल नर्सिंग होम ५०.००
४६- श्री गोपाल राय काबरा ५०.००
४७- श्री हरि ओम अग्रवाल, एडवोकेट ५०.००
४८- श्री कैलाश नाथ गोयल ५०.००
४९- श्री रमेश चन्द्र खण्डेलवाल ५०.००
५०- श्री सीताराम जी (कैन्टीन वाले) ३०.००
५१- श्री हर प्रसाद खण्डेलवाल ३०.००
५२- श्री राम प्रकाश गोयल ३०.००

	रु०
५३- श्री आटो फाईनेन्स कम्पनी	२५.००
५४- श्री ब्रज लाल बाहरी	२५.००
५५- श्री राजेन्द्र कुमार सर्राफ	२५.००
५६- श्री रामासरे लाल राजेन्द्र कुमार	२५.००
५७- श्री राम भरोसे लाल	२५.००
५८- श्री चित्रलोक स्टूडियो	२०.००
५९- श्री अशोक कुमार	१५.००
६०- श्री दिनेश कुमार अग्रवाल	११.००
६१- डा० राजेन्द्र कुमार अग्रवाल	११.००
६२- श्री हरिनन्दन सक्सेना, भूड़	१०.००
६३- श्रीमती लीलावती सक्सेना, भूड़	१०.००

अन्न आदि द्वारा प्रदत्त दान सूची

६४- श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर २५ किलो आटा, १५ किलो चावल	१२५.०
६५- श्री रोशनलाल भाटिया ६ किलो दाल	५४.०
६६- श्री चन्द्र प्रकाश गुलाटी ५ किलो दाल	४५.०
६७- श्री मुरारी लाल (दाल वाले) ५ किलो दाल	४५.०
६८- श्री ला० कपूर चन्द्र अवधेश कुमार एक कुन्टल लकड़ी	९०.०
६९- श्री कृष्ण कुमार मेहता (IWP) एक कुन्टल लकड़ी	९०.०
७०- श्री ओमप्रकाश जी किराने वाले मसाला	१७५.०

श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय, नैनीताल मार्ग, बरेली की
कार्यकारिणी की सूची

श्री त्रिलोक चन्द्र सेठ	संरक्षक
डा. ए. पी. सिंह, (भू.पू. M.L.C.)	सभापति
श्री काशीनाथ शर्मा	उप-सभापति
श्री रामकुमार खण्डेलवाल आभूषण सदन, शिवाजी मार्ग, बरेली फोन : ७७९४९, ७७२०९	वित्त मन्त्री
श्री कैलाश नाथ गोयल फोन : ७२५१८, ७२५१४	मन्त्री
श्री श्रीनाथ खण्डेलवाल	उप-मन्त्री
श्री प्रेमशंकर अग्रवाल	कोषाध्यक्ष
श्री शिव कुमार अग्रवाल	सदस्य
कु० विमला गोयल	,,
श्री गोपाल राय काबरा	,,
,, रामावतार घी वाले	,,
,, रामावतार सर्राफ	,,
,, भगवतशरण अग्रवाल	,,
,, रामकुमार अग्रवाल	,,
,, बालचन्द गुलाटी	,,
,, ब्रजलाल बाहरी	,,
,, शान्तनु कुमार रोहतगी	,,
श्रीमती सावित्री देवी शर्मा प्रधानाचार्य विद्यालय	,,
श्री विनय कुमार भारद्वाज	,,
	आमंत्रित
डा. बलभद्र प्रसाद गोस्वामी	सदस्य
श्री जयनारायण शुक्ल	,,

नारायन प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, नैनीताल रोड, बरेली में मुद्रित।